

O K Belwal J C Purohit Nitin Kamboj Jabrinder Singh

Role of Applied Statistical Techniques in Interdisciplinary Research

Proceedings of National Workshop/Seminar on Recent Statistical Techniques: RRAST-2020



11.	Statistical assessment of groundwater quality parameters in central areas of Haryana, India Pooja, Abhishek Awasthi, Jabrinder Singh	83
12.	'भारतीय प्रतिरक्षा के प्रति सजग अर्द्धसैनिक बल एवं गुप्तचर एजेन्सियां' वेद किशोर रतूड़ी	91
13.	"सिविकम का परिचय तथा भू—सामरिकी स्थिति" सुरेन्द्र सिंह कुंवर	96
14.	"हिन्दमहासागर का स्त्रातेजिकवातावरण एवं भारतीय सुरक्षा" विरेन्द्र सिंह जयाड़ा	100
15.	"नागालैण्ड़ में उग्रवाद एक चुनौती के रूप मे" दिनेश कुमार रावत, आर.सी. एस. कुँवर	103

The Proceedings of National Workshop/Seminar on "Role of Recent Applied Statistical Techniques in Interdisciplinary Research (RRAST)" during February 2010... HNBGU, Srinagar(G), India 102.22, 2020., HNBGU, Srinagar(G), India

"नागालैण्ड् में उग्रवाद एक चुनौती के रूप में"

दिनेश कुमार रावत^{1°} आर.सी. एस. फूँवर² । ज्ञाधार्थी एसा, स्त्रॉतेजिक एवं भू-राजनीति विभाग, हे.न.ब. गढ़वाल (केन्द्रीय) विश्वविद्यालय, श्रीनगर गढ़वाल (उत्तराखण्ड) 2 प्रो. एसा. स्त्रॉतेजिक एवं भू-राजनीति विभाग, हे.न.ब. गढवाल (केन्द्रीय) विश्वविद्यालय, श्रीनगर गढवाल (उत्तराखण्ड)

नागालैण्ड पूर्वोत्तर क्षेत्र का सबसे अशान्त राज्य है। नागालेण्ड में उग्रवादी एवं विप्लवी गतिविधियों की शुरूआत वर्ष 1950 के दशक नागाल रू रू । प्राप्त हुयी, जब फिजो के नेतृत्व में एक अलग राज्य की माँग नागाओं के लिये होने लगती है। वस्तुतः नागा पूर्वी में उस समय शुरु हुयी, जब फिजो के नेतृत्व में एक अलग राज्य की माँग नागाओं के लिये होने लगती है। वस्तुतः नागा पूर्वी म ७५१ पहाड़ी क्षेत्रों के निवासी हैं। जिनकी सीमाएं म्यांमार से लगती हैं और यहाँ पर अनेक प्रकार के जनजातीय समूह हैं जो हिमालय प्रकार की भाषायें बोलते हैं। उल्लेखनीय है कि सन् 1826 में असम पर नियंत्रण करने के पश्चात अंग्रजों ने धीरे-धीरे नागा ावाना में अपना प्रभुत्व जमा लिया। ब्रिटिश शासनकाल के दौरान नागाओं का शेष भारत के साथ किसी भी प्रकार का कोई पहाड़ियों पर भी अपना प्रभुत्व जमा लिया। ब्रिटिश शासनकाल के दौरान नागाओं का शेष भारत के साथ किसी भी प्रकार का कोई पहालिया में अपनाया और राजनीतिक सम्बन्ध नहीं था। अंग्रजों ने भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र के सम्बन्ध में उदारवादी नीतियों को अपनाया और मा प्राचान के इस क्षेत्र में बसने की अनुमति नहीं दी गयी और आदिवासी समुदाय की संस्कृति, परम्परा, रीति–रिवाजों को सरंक्षित बाह्य राज अपना किया गया। जिसका कारण यह था कि अंग्रेज इस क्षेत्र के लोगों को शेष भारत के लोगों से सम्पर्क नहीं रखना चाहते थे। कालान्तर में ईसाई मिशनरियों द्वारा पूर्वोत्तर क्षेत्र में विद्यालय, अस्पतालों की स्थापना को बढ़ावा दिया गया, जिसका प्रमाव बाट्य न पूर्वोत्तर क्षेत्र में अलगाववादी विचारधारा का जन्म हुआ और इसी कारण वहाँ के लोग अलग राज्य की माँग करने लगे। यह हुआ कि पूर्वोत्तर क्षेत्र में अलगाववादी विचारधारा का जन्म हुआ और इसी कारण वहाँ के लोग अलग राज्य की माँग करने लगे।

साकेतिक षद्ध- उग्रवाद, विप्लव, अलगाववाद, जनजातीय विद्रोह

नागालैण्ड एक पर्वतीय राज्य है। राज्य मूल रूप से 'नगा' लोगों की भूमि है। ये मूलतः जनजातीय आदिवासी लोग हैं। 12वीं और 13वीं शताब्दी में नागा लोगों को असम प्रान्त के अहोम लोगों से सम्पर्क हुआ। वर्ष 1881 में नागा हिल्स डिस्ट्रिक्ट का प्रशासन असम के अन्तर्गत रखा गया था, परन्तु यहाँ शेष भारत के कानून लागू नहीं होते थे, इसे 'शेड्यूल्ड' जिला कहा जाता था। 19वीं शताब्दी में यह क्षेत्र ब्रिटिश शासन के अधीन हो गया। वर्ष 1982 तक समूचे नागा भू-भाग पर अंग्रेजों का शासन हो गया था (त्वेंगसांग क्षेत्र को छोड़कर) नागालैण्ड भूगोल और सीमाओं की दृष्टि से उत्तरी-पूर्वी प्रदेश का ही एक भाग था, किन्तु 1 दिसम्बर 1957 से भारत सरकार ने नागा लोगों की एक पृथक राज्य की मांग के अनुसार असम के प्रशासनिक नियंत्रण में एक केन्द्र शासित प्रदेश बनाया गया। 1 दिसम्बर 1963 को नागालैण्ड को विधिवत् राज्य का दर्जा दे दिया गया तथा जिसका शासन भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के अन्तर्गत कोहिमा स्थित राज्यपाल द्वारा चलाया जा रहा है। भारतीय सर्विधान के अनुच्छेद 371 (क) के माध्यम से राज्य के सम्बन्ध में विशेष उपबंध किये गये हैं। वर्ष 1969 में नागालैण्ड को 'विषष राज्य' का दर्जा प्रदान किया गया।1

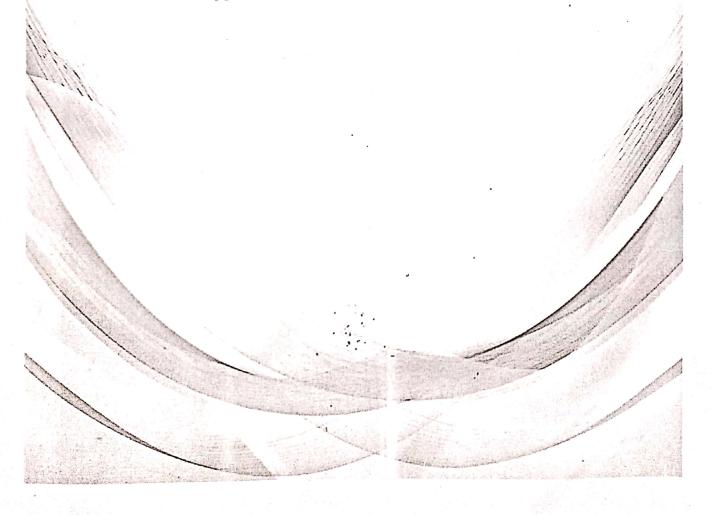
नागालैण्ड 25060' और 25040' उत्तरी अक्षांश तथा 93020' और 95015' पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित है, इसका कुल क्षेत्रफल 16,579 वर्ग कि.मी. है, जो देश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 0.5 प्रतिशत और पूर्वोत्तर क्षेत्र के 6.32 प्रतिशत भू-भाग का प्रतिनिधित्व करता है। यह पूर्वोत्तर भारत के पूर्व में स्थित है, इसके उत्तर-पश्चिम में असम, उत्तर-पूर्व में अरुणाचल प्रदेश, दक्षिण में मणिपुर और पूर्वी छोर पर म्यांमार स्थित है। राज्य की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा की लम्बाई 258 कि.मी. है जो म्यांमार से लगती है। नागालैण्ड के तुएनसांग जिले की सीमा का स्पर्श काफी महत्वपूर्ण है। यह वहीं क्षेत्र है जहाँ विद्रोही नागाओं का गढ़ है। चीन की सीमा यहाँ से 240 कि.मी. दूर है।3 चीन व म्यांमार की सीमाओं से निकटता व संसाधनों की प्रचुरता इस क्षेत्र के स्त्रातेजिक महत्व को स्वतः ही स्पष्ट करती है जो भारत के लिए इस क्षेत्र को सामरिक व रणनीतिक दृष्टि से और अधिक महत्वपूर्ण बना देती है।

अतिवाद, चरमवाद या उग्रवाद का शाब्दिक अर्थ 'अति तक ले जाना' है। यह अंग्रेजी के म्नाजमतउपेज शब्द का अक्षरशः समानार्थी है। इस शब्द का प्रयोग प्रायः धार्मिक-राजनीतिक विषय के उस विचारधारा के लिए होता है, जो समाज की मुख्यधारा की अभिवृत्तियों से काफी दूर मानी जाती है। विभिन्न शब्दकोशों में उग्रवाद को विद्रोह, सरकार अथवा राजनैतिक सत्ता का विरोध, अपने ही देश की सेना अथवा सरकार के विरुद्ध संघर्ष के रूप में परिभाषित किया गया है। एक उग्रवादी वह होता है जो किसी राष्ट्र की औपचारिक सेना में नहीं होता है, किन्तु एक देश के विरुद्ध विद्रोह में संघर्ष करता है। यह एक आन्तरिक राजनैतिक विद्रोह है, जिन्तु एक देश के विरुद्ध विद्रोह में संघर्ष करता है। यह एक आन्तरिक राजनैतिक विद्रोह है, जिसमें न तो पीड़ित राज्य ऐसी गतिविधि को युद्ध की मान्यता देना चाहता है और न ही अन्य राज्य इसे युद्धरत होने की मान्यता

103

दक्षिणी प्रशियाई प्रशांत क्षेत्र के स्नॉतेजिक वातावरण में भारतीय वैदेशिक सम्बन्ध

डॉ. भारती चौहान डॉ. कमलेश चन्द्र पाण्डेय



8. भारत-चीन के मध्य तिब्बत	81
_डॉo भारती चौहान	
 दक्षिण एशिया में अमेरिका की स्त्रातेजी और उसका 	
भारतीय सुरक्षा पर प्रभाव	97
—डॉ. दीर्घपाल सिंह भण्डारी	
10. मालद्वीव में चीन की कूटनीतिक चाल एवं भारतीय सुरक्षा	107
–डॉ <i>० बिरेन्द्र सिंह जयाड़ा</i>	
11. भारत- नेपाल सम्बन्धः बदलता परिदृश्य	113
–डॉ दीपेन्द्र सिंह तोपवाल	113
12. क्षेत्रीय सहकार के रूप में भारत-म्यांमार सम्बन्ध	128
–डॉ० वेद किशोर रतूड़ी	128
13. बदलते वैश्विक परिदृश्य में मोदी सरकार की विदेश नीति	120
–कु० अर्चना और डाॅ० भारती चौहान	138
14. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारत—नेपाल सम्बन्धों में चीन की	
भूमिकाः भारतीय सुरक्षा पर प्रभाव	149
_डॉ0 सतीश चन्द्र जोशी और मनोज कापड़ी	173
15. वर्तमान वैश्विक व्यवस्था में भारत — अमेरिका	
रक्षा सम्बन्ध	158
–डॉ० भरत सिंह चुफाल	
16. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारत—चीन सम्बन्धों के मध्य	
बढ़ता सीमा विवाद	166
–डॉ0 राजेन्द्र सिंह और विनोद ऐरी	
17. भारत आसियान सम्बन्ध —चुनौतियाँ व समाधान	179
–डॉ० मुकेश कुमार टम्टा	
18. 21वीं सदी में भारत अफगानिस्तान सम्बन्ध	194
–दिनेश कुमार रावत और डॉ. आरसी एस कँवर	104
19. भारतीय विदेश नीति के निर्धारक तत्व	211
–डॉ० दिवेश सिंह	

20. वर्तमान परिदृश्य में भारत-बांग्लादेश सम्बन्ध	
(शरणार्थियों के विशेष संदर्भ में)	220
–राहुल कुमार और अभिषेक यादव	
21. एशियाई सुरक्षा के नए दशक में भारत-पाकिस्तान सम्बन्ध	233
<i>–डॉ0 योगेश कुमार</i>	
22. 21वीं सदी में भारत—अमेरिका सम्बन्ध	243
—डॉ <i>० मुकेश कुमार</i>	
List of Contributors	258

21वीं सदी में भारत अफगानिस्तान सम्बन्ध

–िंदिनेश कुमार रावत और डॉ. आर.सी. एस. कुँवर

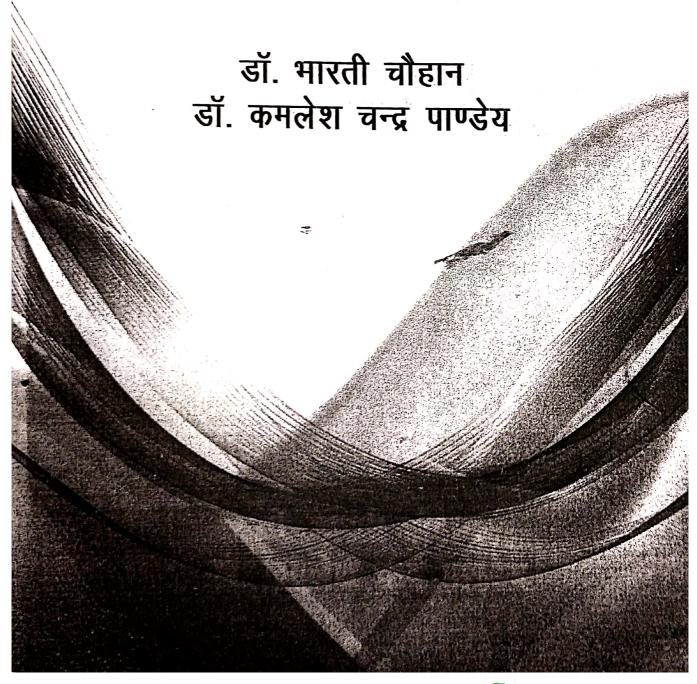
अफगानिस्तान दक्षिण-पश्चिम एशिया में स्थित है। जिसका क्षेत्रफल 657,500 वर्ग किमी. है। इसी पूर्वी सीमा पर पाकिस्तान स्थित है, जो डूरण्ड रेखा से अलग होता है। इसके उत्तर-पूर्व में भारत व चीन, उत्तर में ताजिकिस्तान व हिन्दुकुश पर्वत मालाओं का विस्तार है, पश्चिम में कजाकिस्तान और तुर्कमेकिस्तान तथा दक्षिण-पश्चिम में ईरान बसा है। यह मध्य एशिया और पश्चिम एशिया को भारतीय उपमहाद्वीप से जोड़ता है। अफगानिस्तान सांस्कृतिक एवं व्यापारिक दृष्टि से भारत-पाकिस्तान से जुड़ा हुआ है। अफगानिस्तान के साथ भारत के प्राचीन काल से आर्थिक सांस्कृतिक सम्बद्ध रहे हैं। प्राचीन काल में अफगानिस्तान को गान्धार नाम से जाना जाता था। अफगानिस्तान और भारत 1947 तक पड़ोसी रहे हैं, जब तक पाकिस्तान का गठन नहीं हुआ था। सदियों से भारत पर हमला करने वाले विदेशी आक्रमणकारियों के लिये आधार के रूप में होने के कारण, अफगानिस्तान हमेशा भारत की सुरक्षा के लिये महत्वपूर्ण रहा है। 1947 के बाद भारत और अफगानिस्तान स्वाभाविक रूप से पाकिस्तान के साथ साझा दुश्मनी होने

195

_{21वीं रा}दी में भारत अफगानिस्तान सम्बन्ध 21" के नजदीक आ गये हैं। दोनों देशों के पारस्परिक हित त एक हित के जुड़े हुए हैं। सिंदियों से दोनों देशों ने एक दूसरे की खुशियाँ नम, क्विन्यूर्य संस्कृतियाँ आकांक्षायें विजय-पराजय, उपलब्धियाँ और कुडाएँ विषा । वाँटी है। अफगानिस्तान की शाही सरकार और भारत सरकार के बीच बाटा पर वाय 4 जनवरी 1950 को राजनीतिक और कूटनीतिक सम्बन्धों के बारे में मैत्रीपूर्ण व हुयी थी। इस संन्धि में दोनों देशों के प्राचीन आपसी सम्बन्धों का जिक्र करते हुये दोनों देशों के बीच आगामी प्रगाढ़ सम्बन्धों के बारे में आशा की न्यी थी। जिससे दोनों देशों ने अपने परम्परागत मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को बनाए रखा है। भारत ने शांतिपूर्ण, विकासशील, अफगानिस्तान और मुद्दों के त्माधान की रूपरेखा तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

भारत और अफगानिस्तान के मध्य सामरिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक सम्बन्ध है। दोनों देशों के बीच प्राचीन काल से ही सम्बन्ध रहे हूँ यह सम्बन्ध नई दिल्ली और काबुल सरकारों तक की सीमित नहीं है, बल्कि इन सम्बन्धों की नीव लोगों के बीच ऐतिहासिक सम्पर्कों और उनके बीच आदान-प्रदान से है। अफगानिस्तान दक्षिण एशिया में भारत का एक हम साथी है। दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय सम्बन्ध पारंग्परिक रूप से मजबूत और दोस्ताना रहे हैं। 1980 के दशक में भारत-अफगान सम्बन्धों को एक नई दिशा मिली। 1990 के दशक में तालिबान के उदय से पहले तक भारत ने अफगानिस्तान की सरकारों का लगातार समर्थन किया। लेकिन ज्यादातर देशों की तरह, भारत ने 1996 में तालिबान की सत्ता की धारणा को कभी मान्यता नहीं दी (केवल सऊदी अरब, पाकिस्तान और संयुक्त अरब अमीरात ने तालिबान शासन को मान्यता दी)। 11 सितम्बर 2001 को अमेरिका में हुये अलकायदा के हमलों के बाद अमेरिका के नेतृत्व में अफगानिस्तान में तालियान शासन और अलकायदा के विरुद्ध कार्यवाही की गयी एवं 22 दिसम्बर 2001 को अफगानिस्तान में तत्कालीन राष्ट्रपति हामिद करजई के नेतृत्व में अन्तरिम सरकार की स्थापना की गयी। अफगानिस्तान में अन्तरिम सरकार की रथापना के बाद भारत और अफगानिस्तान के सम्बन्ध एक वार फिर मजबूत हुए। अफगानिस्तान की नई अन्तरिम सरकार के साथ भारत पहला ऐसा देश था, जिसने 23 दिसम्बर 2001 को अफगानिस्तान की नई सरकार के साथ राजनीतिक सम्बन्ध स्थापित करके अपने दूतावास को

दक्षिणी पुश्चियाई प्रशांत क्षेत्र के स्नॉतेजिक चातावरण में भारतीय वैदेशिक सम्बन्ध



अनुक्रमणिका

and the second s	(vii)
1 वैश्विक भू राजनीति के दौर में भारत के लिए हिंद प्रशांत क्षेत्र की प्रासंगिकता —डॉ० भारती चौहान और डॉ० कमलेश चन्द्र पाण्डेय	. 1
2. एशिया महाद्वीप में शांति एवं स्थिरता को खतरा (सुरदा के परिपेक्ष्य में) —डॉ० गोरखनाथ	14
 उन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के सन्दर्भ में कौटिल्य के विचारों प्रासंगिकता विशेन्द्र सिंह जयाड़ा 	22
4 चस्तीय विदेश नीति की अवधारणा और दक्षिण एश्वर्याई प ड़ोसी देश —डॉo आरती यादव	31
५ मास्त नेपा ल सम्बन्धों के मध्य कालापानी विवाद <i>—डॉ० भारती चौहान</i>	46
मस्त रूस दो स्ती का नया दौर तथा भारतीय सुरक्षा —डॉ० कमलेश चन्द्र पाण्डेय और डॉ० आर० सी० एस० कुंवर	57
टे ठीव युद्धोत्तर काल में भारत की विदेश नीति डॉ० विजय कुमार	70

भारत रूस दोस्ती का नया दौर तृथा भारतीय सुरक्षा

–डॉ० कमलेश चन्द्र पाण्डेय और डॉ० आर० सी० एस० कुॅवर

मारत व रूस के रिश्तों का एक लम्बा विस्तृत इतिहास रहा है साथ ही व समुदाय के सम्मुख एक अनुठा रिश्तों का उदाहरण है। यदि इससे पूर्व व व रूस के सम्बन्धों का अध्ययन किया जाए तो दोनों देशों के सम्बन्धों में कि समरूपता का समागम मिलता है। भारत की स्वतंत्रता के बाद मह मी सत्य रहा है कि दोनों देशों के मध्य कुछ बिन्दुओं पर मनमुटाव न रहे। परन्तु समय के साथ–साथ दोनों राष्ट्रों के मनमुटावों में बा आई और एक दूसरे के सच्चे मित्र के रूप में उभरे। समय के उतार 🛪 🕏 दौरान एक दूसरे के आर्थिक व अपनी अपनी आन्तरिक समस्याओं ग्रसित रहे। परन्तु दोनों के मध्य सम्बन्धों की डोर निरन्तर कायम रही। विखण्डन के समय भी भारत ने रूस को आन्तरिक तनाव से पुनः हेतु ढांढस बढ़ाया था कि वह जल्द ही अपने बिखरे हुए स्वरूप की 🕏 दंश से अपने आपको वास्तविक शक्ति के रूप में विश्व समुदाय के उपना अस्तित्व मानचित्र में पुनः अंकित करेगा और आज वह इसे वाबित भी कर चुका है। विश्व के सम्मुखं एक महाशकित के रूप में

कोविड-19 काल में भारत-चीन सम्बन्धों के परिवर्तित आयाम



संपादक

डॉ. अभय शंकर सिंह एसो. प्रोफेसर, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन सतीश चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय वलिया (उ.प्र.)

डॉ. श्याम विहारी श्रीवास्तव अध्यक्ष, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग अमरनाय मिश्र पी.जी. कॉलेज, दूवेछपरा वलिया (उ.प्र.)

डॉ. फिरोज खान विभागाध्यक्ष, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, वाँसडीह विलया (उ.प्र.)

> राधा पब्लिकेशन्स नई दिल्ली-110002

	भारत-चीन सम्बन्धों के परिवर्तित आयाम डॉ. पुष्येन्द्र सिंह यावय	70
10.	वर्तमान परिदृश्य में भारत-चीन सम्बन्ध <i>डॉ. अभव कुमार श्रीवास्तव</i>	85
11.	दक्षिण चीन सागर में चीन की रणनीति लाल बहादुर राम	92
12.	कोरोना आपदा के बाद अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के बदलते आयाम <i>डॉ. रमा भाटिया</i>	102
13.	चीन का साइवर युद्ध और भारत विपिन कुमार	107
14.	भारत और चीन के मध्य सीमा संघर्ष डॉ. वीरेन्ट्र चन्द्र	114
15.	भारत-चीन रिश्तों के बदलते आयाम डॉ. गणेश कुमार पाठक	118
16.	भारत-चीन का बदलते वैश्विक परिदृश्य में सम्बन्धः एक समीक्षा एस. सी. श्रीवास्तव	124
17	गलदान घाटी विवाद : कोविङ-19 काल में भारत-चीन सम्बन्धों का बदलता स्वरूप अमित सिंह/डॉ. अजय कुमार सिंह	130
18.	पूर्वोत्तर क्षेत्र में भारत-चीन सीमा विवाद एक चुनौती के रूप में <i>हिनेश कुमार रावत/प्रो.आर.सी.एस. कुँवर</i>	137
19.	साइवर सुरक्षा और वर्तमान भारत-चीन सम्बन्ध वंदना कुमारी	148
20.	कोविड-19 का परिप्रेक्ष्य और भारत-चीन सम्बन्ध <i>रंजीत कुमार/</i> डॉ. जयकुमार मिश्र	154

 कोविड-19 काल में मारत-चीन सम्बन्धों का विश्लेषणात्मक अध्ययन अरुणादेवी 	159
22. नेपाल का चीन की तरफ झुकाव : मारत के लिए चुनौती <i>हंसराज</i>	167
 भारतीय सुरक्षा परिदृश्य में चीन का प्रमाव कुमारी ज्योति वर्मा 	175
 क्वॉड : हिन्द-प्रशांत क्षेत्र का सुरक्षा कवच अमरेन्द्र कुमार तिवारी 	182
25. भारत-चीन सम्बन्घों का इतिहास <i>प्रदीप कुमार</i>	187
26. A Self Dependent India And Emphasis On The Local Can Help Shape A New World- Order A Post Covid-19 Effect	193

156 कोविष्ट-19 काल में भारत-चीन सम्बन्धों के परिवर्तित आयाम हद तक पीढ़े हटा लिया है। मानव जाति का इतिहास वैसे तो युद्धों का इतिहास कहा जाता है, तेकिन आज एशिया के ये दोनों राष्ट्र नाभिकीय-आयुध सम्पन्न हैं। यदि इनके बीच युद्ध होता है, तो उसकी विभीषिका कल्पना से भी परे है। किसी भी संवर्ष में रक्त बहाकर विजय तो प्राप्त की जा सकती है, लेकिन शान्ति नहीं प्राप्त की जा सकती है जो मानव-कल्पाण के साथ-साथ इस सृष्टि का भी मूल-मंत्र है।अतः भारत व चीन को भी अपने तीमा-सम्बन्धी वैचारिक मतभेदों को सुलझा कर इस मंत्र पर अमत करते हुने विश्व-शान्ति की संकल्पना के प्रति अपनी प्रतिवद्धता पर बल देना चाहिए ताकि भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो।

सन्दर्भ

- मूर्ति, डॉ. टी.एस., "इण्डिया चाइना बाउंडरी: इंडियाज ऑप्शन्स" ए.बी.सी. पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, भारत, 1987, पृ.सं. 18
- पाण्डेच, वाबूराम "युद्ध एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्यन्ध" प्रकाश युक डिपो, बरेली, भारत, 1990, पृ.सं. 125
- शर्मा. डॉ. संजय कुमार, "भारत-चीन सम्बन्धः वदलता परिदृश्य" एविन्सपव पब्लिकंशन, विलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत, 2020, पृ. सं. 203-206
- चतुर्वेदी. डॉ. अरविन्द कुमार, "भारत के पड़ोसी राष्ट्र और सुरक्षा चुनीतियाँ" ए. वी. पब्लिकेशन, मयूर विहार, नई दिल्ली, भारत, 2010, पृ.सं. 249-252
- হ হাহন্দ আঁদ্ধ হৃতিহ্বা, 17 जून, 2020, https://timesofindia.indiatimes.com/ india/india-china-standoff-how-the-galwan-valley-clash-unfolded/articleshow-76418009-cms
- जागरण, हिन्दी न्यूज़ / राष्ट्रिय 16 जून, 2020, https://www.jagran.com/news/ national-galvan-valley-dispute-know-the-history-of-this-india-china-borderjagran-special-20398191-html
- 7. बी.बी.सी. न्यूज़ हिन्दी, 23 जून, 2020, https://www.bbc.com/hindi/india-
- कार, विनय, "इण्डियाज रिलेशन्स विद चाइना फ्राम द डोकलाम क्राइसिस दू द गलवान ट्रेजर्डा" इण्डिया क्वारटर्ली, Vol. 76 Issue 4, 2020, पृ. सं. 501-518, doi:10-1177/0974928420961768

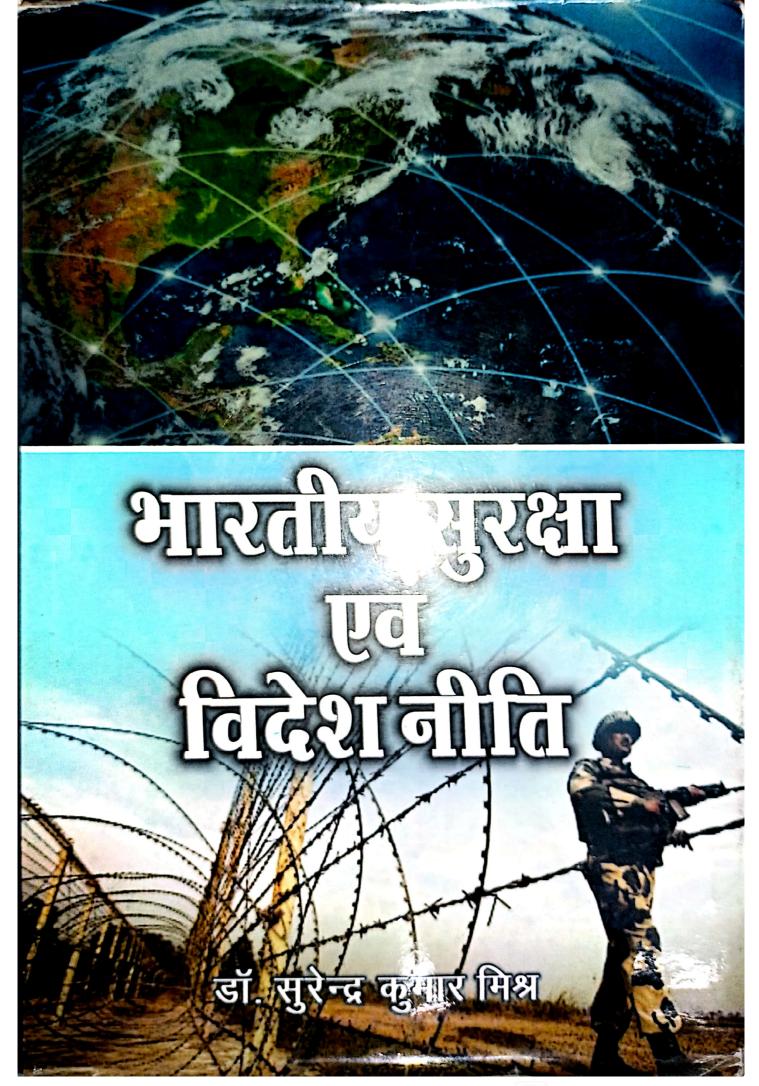
पूर्वोत्तर क्षेत्र में भारत-चीन सीमा विवाद एक चुनौती के रूप में

*दिनेश कुमार रावत **प्रो.आर.सी.एस. कुँवर

भारत और चीन विश्व के दो यड़े विकासशील देश हैं। दोनों देशों के वीच 3,488 कि.मी. लम्बी सीमा रेखा है। दोनों देशों में प्राचीनकाल से ही सांस्कृतिक तथा आर्थिक सम्बन्ध रहे हैं। भारत द्वारा बीद्ध धर्म का प्रचार चीन की भूमि पर हुआ है। चीन के लोगों ने प्राचीन काल से ही बौद्ध धर्म की शिक्षा ग्रहण करने के लिये भारत के विश्वविद्यालयों नालन्दा एवं तक्षिशिला को चुना था। उस समय संसार में अपने तरह के ये दो विश्वविद्यालय शिक्षा के महत्वपूर्ण केन्द्र थे। इस काल से ही भारत-चीन सम्बन्ध धनिष्ट रहे हैं। महाभारत तथा मनुस्मृति में भी घीन का उल्लेख है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में चीनी सिल्क का उल्लेख मिलता है। प्रथम शताब्दी के एक चीनी ग्रन्थ से भी पता चलता है कि भारत और चीन के सम्बन्ध प्रगाढ़ थे। स्वतंत्रता के पश्चात् मित्रता को कायम रखने का प्रयास किया गया। भारत ने वर्ष 1949 में क्यूमितांग सरकार के पतन के पश्चात् नई कम्युनिस्ट सरकार को मान्यता देकर खुले दिले से सहयोग का परिचय दिया। तिब्बत और सीमा सम्बन्धी प्रश्नों को लेकर भारत-चीन के मध्य वर्ष 1962 का युद्ध हुआ। भारत-चीन के वीच विवाद का मुख्य कारण 'मैकमोहन रेखा' है जिसका निर्धारण सन् 1912 में तिब्बत के स्वतंत्र घोषित होने के वाद एक समझौते द्वारा हुआ था। इस समझौते के लिये वार्त

*शोधार्थी, रक्षा, स्त्रातजिक एवं भू-राजनीति विमाग, हे.न.व. गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

**विभागाध्यक्ष, रक्षा, स्त्रातजिक एवं भू-राजनीति विभाग, हे.न.च. गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर, गढ़वाल (उत्तराखण्ड)



भारतीय	सरक्षा	_{एवं}	विदेश	-00
	77 (41)	74	144	नाति

xii		उप विषय नाति
19.	भारत चीन सम्बन्ध, नयी चुनौतियां	186
20.	भारत की विदेश नीति चीन के सन्दर्भ में	196
	भारतीय राजनय एवं सुरक्षा	206
22.	भारतीय विदेश नीति व भारत यूरोपीय संघ	219
23.	विदेश नीति और राष्ट्रीय सुरक्षा	228
24.	अफ्रीका, भारत और चीन	234
25.	चीन की विदेश—नीति और भारत की सुरक्षा	244
26.	भारतीय विदेश नीति एवं राष्ट्रीय सुरक्षा	254
27.	भारतीय विदेश नीति व हिन्द महासागर	262
28.	बदलते अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश में भारत—अमेरिका सम्बंध : एक नज़र	269
29.	चीन की सामुद्रिक महत्वाकांक्षा एवं भारतीय सुरक्षा	275
30.	अर्न्तराष्ट्रीय सम्बन्ध व भारतीय नौ—सेना	283
	Contributors	289

चीन की सामुद्रिक महत्वाकांक्षा एवं भारतीय सुरक्षा

डाँ० भारती चौहान व डाँ० डी०पी०एस भण्डारी

सारांश

एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में उभरते हुए चीन ने समुद्री क्षेत्र में भी अपनी भाक्ति को बढाया है, समुद्री क्षेत्र में चीन ने अपने प्रभाव को बढ़ाने के लिए हिन्द महासागर क्षेत्र में स्ट्रीग ऑफ पर्ल्स की नीति अपनाकर भारत को घेराबन्दी कर रखी है तथा दक्षिणी चीन सागर में अपना प्रमुत्व बढ़ाने हेतु कई छोटे—छोटे द्वीपों का निर्माण कर रहा है। चीन की समुद्री क्षेत्र में बढती रूचि भारत के लिए चुनौती उत्पन्न कर सकती है।

सामुद्रिक शक्ति किसी भी राष्ट्र की सुरक्षा में महत्वपूर्ण स्थान रखती है, जिस राष्ट्र की भी सीमा का निर्धारण समुद्र द्वारा होता है उसका स्वाभाविक महत्व बढ़ जाता है। भारत की सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला हिन्द महासागर भी चीन की सामुद्रिक महत्वाकांक्षाओं से अछूता नहीं रह पाया है। 19 वीं सदी के महान नौ सैनिक विशेषज्ञ **ए**0टी0 माहन के कथन— "जो भी देश हिन्द महासागर को नियन्त्रित करता है, वह एशिया पर वर्चस्व स्थापित करेगा, यह सात समुद्रों की कुंजी है तथा 21 वीं सदी में विश्व के भाग्य का निर्धारण इसी समुद्री सतह पर होगा" को चीन भी अनदेखा नहीं कर पाया। वह भी हिन्द महासागर में अपना वर्चस्व स्थापित करने हेतु प्रयासरत है।

यद्यपि चीन की सामुद्रिक शक्ति का अभियान 15 वीं शताब्दी में समुद्र पार के खोजी अभियानों से पूर्व शुरू हो चुका था। सन् 1420 ई० में मिंग शासकों की नौ सेना में कुल 1350 लड़ाकू जहाज जिनमें किलेनुमा विशाल पोत एवं लम्बी दूरी तक नौकायन करने हेतु समर्थ जहाज शामिल थे। एडिमिरल चेंग हो के नेतृत्व में एक लाख से अधिक चीनी नौ सैनिकों के क सीनिकों ने सैकड़ों जहाजों के साथ 1433 से लेकर 1525 के मध्य श्रीलंका के बन्दरगाह पर लंगर डाला और कुछ स्थानीय शासकों को उपहार आदि देकर और डरा धमका कर यीन का कर यीन का वर्चस्व स्वीकार करने हेतु बाध्य किया। तत् पश्चात् मंगोल जाति से मिल रही धमिकियों के -धमिकियों ने उसके नौ सैनिक अभियानों पर विराम लगाया। साम्राज्यवाद के स्वर्ण काल में

शिक्षा, साहित्य और राष्ट्रप्रेम

संपादक डॉ. अरुण कुमार चतुर्वेदी धर्मेन्द्र कुमार मौर्य

Writers Choice New Delhi

Copyright © Editors

All rights reserved. Without limiting the rights under copyright above, no part of this publication may be reproduced, utilized, stored in or introduced into a retrieval system, or transmitted, in any form or by any means (electronic, owner and the publisher.

The views expressed by the contributors are strictly their own and the Editor does not necessarily subscribe to them. The contributors are also responsible for the material they have used in the respective chapters—source and copyright permissions, etc. and the Editor and the Publisher are not responsible at all in this respect.

First Published 2019

ISBN: 978-93-84081-50-8

Price: Rs. 999.00

Printed at Replika Press Pvt. Ltd.

Writers Choice

B-258, Rama Park Road Mohan Garden New Delhi -110059

Email: info@writerschoice.in Web: www.writerschoice.in

डॉ. अनिता जोशी एवं डॉ. गीता पंत 106. विज्ञापन एवं बाजार में हिन्दी डॉ. वृजेश कुमार मिश्र 107. राष्ट्रीय सुरक्षा और आतंकवाद डॉ. दीपक कुमार तिवारी व डॉ. ऋचा तिवारी 108. आतंकवाद का वैश्विक परिदृश्य डॉ. कमलेश चन्द्र पाण्डेय 109. आतंकवाद — राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक चुनौती डॉ. श्रीमती मंजू आर्या एवं डॉ. मुन्नी पाठक 110. शिक्षक के प्रभावी शिक्षण में सूचना एवं संचारण तकनीकी का योगदान डॉ. पुनीत चंद्र वर्मा एवं प्रो. देवेंद्र कुमार 111. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में साहित्य बोध एवं भूगोल शिक्षण डॉ. पुण्पा पंत जोशी 112. नक्सलवाद आन्तरिक सुरक्षा के सम्मुख चुनौती डॉ. अतुल चन्द व कफील अहमद 113. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समाज में बाजारवाद की भूमिका डॉ. ज्योति रानी झा 114. पर्वतीय राज्यों में पेयजल की गुणवत्ता तथा उसके अनुमापन की आवश्यकता किरन पाटनी, चित्रा पाण्डेय, पंकज कुमार भट्ट, आशुतोष पाण्डे एवं प्रियंका तिवारी 115. आतंकवाद एवं राष्ट्रीय सुरक्षा कमल कान्त जोशी एवं डॉ आशा राणा 116. विज्ञापन एवं बाजार में हिन्दी	104.	विज्ञापन : बाजार एवं हिन्दी बृजेश सिंह	424
106. विज्ञापन एवं बाजार में हिन्दी डॉ. वृजेश कुमार मिश्र 107. राष्ट्रीय सुरक्षा और आतंकवाद डॉ. दीपक कुमार तिवारी व डॉ. ऋचा तिवारी 108. आतंकवाद का वैश्विक परिदृश्य डॉ. कमलेश चन्द्र पाण्डेय 109. आतंकवाद — राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक चुनौती डॉ. श्रीमती मंजू आर्या एवं डॉ. मुन्नी पाठक 110. शिक्षक के प्रभावी शिक्षण में सूचना एवं संचारण तकनीकी का योगदान डॉ. पुनीत चंद्र वर्मा एवं प्रो. देवेंद्र कुमार 111. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में साहित्य बोध एवं भूगोल शिक्षण डॉ. पुष्पा पंत जोशी 112. नक्सलवाद आन्तरिक सुरक्षा के सम्मुख चुनौती डॉ. अतुल चन्द व कफील अहमद 113. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समाज में बाजारवाद की भूमिका डॉ. ज्योति रानी झा 114. पर्वतीय राज्यों में पेयजल की गुणवत्ता तथा उसके अनुमापन की आवश्यकता किरन पाटनी, चित्रा पाण्डेय, पंकज कुमार भट्ट, आश्रुतोष पाण्डे एवं प्रियंका तिवारी 115. आतंकवाद एवं राष्ट्रीय सुरक्षा कमल कान्त जोशी एवं डॉ आशा राणा 116. विज्ञापन एवं बाजार में हिन्दी उचना पाल	105.	विज्ञापन एवं बाजार में हिन्दी डॉ. अनिता जोशी एवं डॉ. गीता पंत	428
107. राष्ट्रीय सुरक्षा और आतंकवाद डॉ. दीपक कुमार तिवारी व डॉ. त्रघ्चा तिवारी 108. आतंकवाद का वैश्विक परिदृश्य डॉ. कमलेश चन्द्र पाण्डेय 109. आतंकवाद — राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक चुनौती डॉ. श्रीमती मंजू आर्या एवं डॉ. मुन्नी पाठक 110. शिक्षक के प्रभावी शिक्षण में सूचना एवं संचारण तकनीकी का योगदान डॉ. पुनीत चंद्र वर्मा एवं प्रो. देवेंद्र कुमार 111. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में साहित्य बोध एवं भूगोल शिक्षण डॉ. पुष्पा पंत जोशी 112. नक्सलवाद आन्तरिक सुरक्षा के सम्मुख चुनौती डॉ. अतुल चन्द व कफील अहमद 113. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समाज में बाजारवाद की भूमिका डॉ. ज्योति रानी झा 114. पर्वतीय राज्यों में पेयजल की गुणवत्ता तथा उसके अनुमापन की आवश्यकता किरन पाटनी, चित्रा पाण्डेय, पंकज कुमार भट्ट, आशुतोष पाण्डे एवं प्रियंका तिवारी 115. आतंकवाद एवं राष्ट्रीय सुरक्षा कमल कान्त जोशी एवं डॉ आशा राणा 116. विज्ञापन एवं वाजार में हिन्दी	106.	विज्ञापन एवं बाजार में हिन्दी	432
108. आतंकवाद का वैश्विक परिदृश्य डॉ. कमलेश चन्द्र पाण्डेय 109. आतंकवाद — राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक चुनौती डॉ. श्रीमती मंजू आर्या एवं डॉ. मुन्नी पाठक 110. शिक्षक के प्रभावी शिक्षण में सूचना एवं संचारण तकनीकी का योगदान डॉ. पुनीत चंद्र वर्मा एवं प्रो. देवेंद्र कुमार 111. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में साहित्य बोध एवं भूगोल शिक्षण डॉ. पुष्पा पंत जोशी 112. नक्सलवाद आन्तरिक सुरक्षा के सम्मुख चुनौती डॉ. अतुल चन्द व कफील अहमद 113. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समाज में बाजारवाद की भूमिका डॉ. ज्योति रानी झा 114. पर्वतीय राज्यों में पेयजल की गुणवत्ता तथा उसके अनुमापन की आवश्यकता किरन पाटनी, चित्रा पाण्डेय, पंकज कुमार भट्ट, आशुतोष पाण्डे एवं प्रियंका तिवारी 115. आतंकवाद एवं राष्ट्रीय सुरक्षा कमल कान्त जोशी एवं डॉ आशा राणा 116. विज्ञापन एवं बाजार में हिन्दी रचना पाल	107.	राष्ट्रीय सुरक्षा और आतंकवाद	434
डॉ. श्रीमती मंजू आर्या एवं डॉ. मुन्नी पाठक 110. शिक्षक के प्रभावी शिक्षण में सूचना एवं संचारण तकनीकी का योगदान डॉ. पुनीत चंद्र वर्मा एवं प्रो. देवेंद्र कुमार 111. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में साहित्य बोध एवं भूगोल शिक्षण डॉ. पुष्पा पंत जोशी 112. नक्सलवाद आन्तरिक सुरक्षा के सम्मुख चुनौती डॉ. अतुल चन्द व कफील अहमद 113. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समाज में बाजारवाद की भूमिका डॉ. ज्योति रानी झा 114. पर्वतीय राज्यों में पेयजल की गुणवत्ता तथा उसके अनुमापन की आवश्यकता िकरन पाटनी, चित्रा पाण्डेय, पंकज कुमार भट्ट, आशुतोष पाण्डे एवं प्रियंका तिवारी 115. आतंकवाद एवं राष्ट्रीय सुरक्षा कमल कान्त जोशी एवं डॉ आशा राणा 116. विज्ञापन एवं बाजार में हिन्दी रचना पाल	108.	आतकवाद का वैश्विक परिदृश्य	436
 110. शिक्षक के प्रभावी शिक्षण में सूचना एवं संचारण तकनीकी का योगदान डॉ. पुनीत चंद्र वर्मा एवं प्रो. देवेंद्र कुमार 111. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में साहित्य बोध एवं भूगोल शिक्षण डॉ. पुष्पा पंत जोशी 112. नक्सलवाद आन्तरिक सुरक्षा के सम्मुख चुनौती डॉ. अतुल चन्द व कफील अहमद 113. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समाज में बाजारवाद की भूमिका डॉ. ज्योति रानी झा 114. पर्वतीय राज्यों में पेयजल की गुणवत्ता तथा उसके अनुमापन की आवश्यकता किरन पाटनी, चित्रा पाण्डेय, पंकज कुमार भट्ट, आशुतोष पाण्डे एवं प्रियंका तिवारी 115. आतंकवाद एवं राष्ट्रीय सुरक्षा कमल कान्त जोशी एवं डॉ आशा राणा 116. विज्ञापन एवं बाजार में हिन्दी रचना पाल 	109.	आतंकवाद — राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक चुनौती डॉ. श्रीमती मंजू आर्या एवं डॉ. मुन्नी पाठक	442
111. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में साहित्य बोध एवं भूगोल शिक्षण डॉ. पुष्पा पंत जोशी 112. नक्सलवाद आन्तरिक सुरक्षा के सम्मुख चुनौती डॉ. अतुल चन्द व कफील अहमद 113. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समाज में बाजारवाद की भूमिका डॉ. ज्योति रानी झा 114. पर्वतीय राज्यों में पेयजल की गुणवत्ता तथा उसके अनुमापन की आवश्यकता िकरन पाटनी, चित्रा पाण्डेय, पंकज कुमार भट्ट, आशुतोष पाण्डे एवं प्रियंका तिवारी 115. आतंकवाद एवं राष्ट्रीय सुरक्षा कमल कान्त जोशी एवं डॉ आशा राणा 116. विज्ञापन एवं बाजार में हिन्दी रचना पाल	110.	शिक्षक के प्रभावी शिक्षण में सूचना एवं संचारण तकनीकी का योगदान	447
डॉ. अतुल चन्द व कफील अहमद 113. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समाज में बाजारवाद की भूमिका डॉ. ज्योति रानी झा 114. पर्वतीय राज्यों में पेयजल की गुणवत्ता तथा उसके अनुमापन की आवश्यकता किरन पाटनी, चित्रा पाण्डेय, पंकज कुमार भट्ट, आशुतोष पाण्डे एवं प्रियंका तिवारी 115. आतंकवाद एवं राष्ट्रीय सुरक्षा कमल कान्त जोशी एवं डॉ आशा राणा 116. विज्ञापन एवं बाजार में हिन्दी रचना पाल	111.	वर्तमान परिप्रेक्ष्य में साहित्य बोध एवं भूगोल शिक्षण	452
डॉ. ज्योति रानी झा 114. पर्वतीय राज्यों में पेयजल की गुणवत्ता तथा उसके अनुमापन की आवश्यकता किरन पाटनी, चित्रा पाण्डेय, पंकज कुमार भट्ट, आशुतोष पाण्डे एवं प्रियंका तिवारी 115. आतंकवाद एवं राष्ट्रीय सुरक्षा कमल कान्त जोशी एवं डॉ आशा राणा 116. विज्ञापन एवं बाजार में हिन्दी रचना पाल	112.		455
114. पवताय राज्या में पवजल का गुणवता तथा उत्तक जनुमान का जावस्वकता किरन पाटनी, चित्रा पाण्डेय, पंकज कुमार भट्ट, आशुतोष पाण्डे एवं प्रियंका तिवारी 115. आतंकवाद एवं राष्ट्रीय सुरक्षा कमल कान्त जोशी एवं डॉ आशा राणा 116. विज्ञापन एवं बाजार में हिन्दी रचना पाल	113.		462
115. आतंकवाद एवं राष्ट्रीय सुरक्षा कमल कान्त जोशी एवं डॉ आशा राणा 116. विज्ञापन एवं बाजार में हिन्दी रचना पाल	114.	किरन पाटनी, चित्रा पाण्डेय, पंकज कुमार भट्ट, आशुतोष पाण्डे एवं प्रियंका	465
116. विज्ञापन एवं बाजार में हिन्दी रचना पाल	115.	आतंकवाद एवं राष्ट्रीय सुरक्षा	471
	116.	विज्ञापन एवं बाजार में हिन्दी	477
्पिथौरागढ़, राज्य उत्तराखण्ड के विशेष सन्दर्भ म	17.	व्यापार की वृद्धि एवं विकास में हिन्दी भाषा की भूमिका'ः पर्वतीय क्षेत्र जनपद पिथोरागढ़, राज्य उत्तराखण्ड के विशेष सन्दर्भ में	480
राहुल चन्द्रा 118. मारत—श्रीलंका संबंधों के मध्य तमिल शरणार्थीयों की समस्या राहुल कुमार एवं डॉ. भारती चौहान	18.	र्वास्त भीलंका संबंधों के मध्य तमिल शरणाथीयों की समस्या	484

भारत-श्रीलंका संबंधों के मध्य तिमल शरणार्थीयों की समस्या

–राहुल कुमार/डॉ. भारती चौहान

भारत-श्रीलंका संबंधों का इतिहास

भारत की भांति श्रीलंका ने भी अपनी विदेशनीति में गुटनिरपेक्षता की नीति को प्रमुख स्थान दिया। भारत ने भी उसकी इस नीति को स्वीकार करने की घोषणा कर दी परन्त दूसरी और श्रीलंका सरकार भारत के प्रति सन्देह एवं अविश्वास की भावना से ग्रसित रही। उसके त्तकालीन प्रधानमंत्री जॉन कोटलेवाला ने तो भारत को साम्राज्यवादी राष्ट्र तक कह डाला। 1 सन 1955 में सोलोमन भण्डारनायके के प्रधानमंत्री बन जाने पर श्रीलंका को गणराज्य घोषित किया गया। इसके साथ ही उन्होंने उचित प्रकार से गुटनिरपेक्षता की नीति पर चलने का भरसक प्रयास किया। वे पंचशील सिद्धातं में आस्था रखते थे तथा भारत के साथ मैत्रीपूर्ण संबंधों को बनाये रखने का सदैव प्रयास किया। उनका मानना था कि श्रीलंका को भारत से किसी प्रकार का खतरा नहीं हैं। अपित् भारत. श्रीलंका के साथ एक सहयोगी की भूमिका में सदैव उसका सहयोग करेगा। 25 सितम्बर 1959 में एक बौद्ध भिक्षु के द्वारा उनकी हत्या कर दी गयी। जिसके कारण श्रीलंका में राजनीतिक संकंट खड़ा हो गया। जुलाई 1960 में उनकी पत्नी श्रीमती सरिमोवा भण्डारनायके के प्रधानमंत्री बन जाने के बाद संकट समाप्त हो गया। श्रीमती भडणरनायके ने भी भारत के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बधों को बनाये रखने पर बल दिया। सही मायनों में श्रीलंका के साथ संबन्धों की शुरूआत प्रधानमंत्री भण्डारनायके के प्रधानमन्त्रीत्व समय से मानी जा सकती है।2 सन् 1962 के भारत-चीन युद्ध के दौरान श्रीलंका की आश्चर्यजनक प्रतिक्रियाएं थीं। 24 अक्टूबर 1962 को श्रीलंका की कैबिनेट ने एक प्रस्ताव स्वीकृत करके भारत व चीन के सशस्त्र संघर्ष के समुचित समाधान हेतु प्रयास किया, क्योंकि यह भारतीय उपमहाद्वीप की शान्ति व सुरक्षा के साथ-साथ विश्व शान्ति से संबंधित थी। इतना होने के बावजूद श्रीलंका ने स्पष्ट शब्दों में कभी-भी चीन पर कोई आरोप नहीं लगाया। क्योंकि चीन के साथ वह अपने व्यापारिक संबंधों को नहीं तोड़ना चाहता। 3 प्रधानमंत्री श्रीमती भण्डारनायके ने नवम्बर-दिसम्बर 1968 ई0 में भारत की यात्रा की।

89.	राष्ट्रभावना के विकास में हिन्दी पत्रकारिता का योगदान डॉ. जगदीश चन्द्र जोशी	363
90.	हिन्दी साहित्य में राष्ट्र, समाज एवं संस्कृति ममता पुरी	365
91.	भारतीय राष्ट्रवाद में राष्ट्रवादी महिलाओं का योगदान मीना उपाध्याय एवं डॉ. सरोज वर्मा	369
92.	लोक साहित्य से राष्ट्रीय भावना जाग्रत करने में संगीत का स्थान प्रियंका पाण्डेय	372
93.	भारतीय संस्कृति की व्यापकता: वैज्ञानिक दृष्टिकोण के संदर्भ में एस.के. आर्य एवं अरुण कुमार चतुर्वेदी	375
94.	स्वतंत्रता आन्दोलन और हिन्दी पत्रकारिता डॉ. सुभाष चन्द्र सिंह कुशवाहा	378
95.	वेदों में राष्ट्रीय भावना डॉ. सुशीला पन्त	384
	पंचम खण्ड : समसामयिक विमर्श	
96.	वृक्ष एवं वनस्पतियों का पर्यावरण संरक्षण में योगदान सुनीता कलौनी एवं डॉ. आभा शर्मा	390
97.	भारत में आतंकवाद: वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आलोक अवस्थी	393
98.	राष्ट्रीय भावना को फैलाने में पत्रकारिता का योगदान: उत्तराखंड के सन्दर्भ में अंकित कुमार एवं डॉ. रिम पन्त	397
99.	विज्ञापन एवं बाजार में हिन्दी	400
100.	अनु पाण्डेय भारतीय सशस्त्र सेना में महिलाओं की भूमिका	404
* 1000	कु. अर्चना एवं डॉ. भारती चौहान हिन्दी भाषा का वाजार विभवित्तकरण और विज्ञापन प्रचार में प्रभाव	412
101.	TIELIS	318
102.	भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा पर आतंकवाद का प्रभाव बबीता धामी	421
103,	विज्ञापन प्रभावोत्पादकता में हिन्दी की उपयोगिता रचना पाल एवं शान्ति	

भारतीय सशस्त्र सेना में महिलाओं की भूमिका

-क. अर्चना / डॉ. भारती चौहान

भारतीय ऋषियों ने अर्थवेद में 'माता भूमिः पुत्रों अहं पृथिव्याः' (अर्थात भूमि मेरी माता और हम इस धरा के पुत्र हैं) की प्रतिष्ठा की तभी सम्पूर्ण विश्व में नारी-महिमा का उद्घोष हो गया था। नेपोलियन बोनापार्ट ने नारी की महता को बताते हुये कहा था कि "मुझे एक योग्य माता दे दो, मैं तुमको एक योग्य राष्ट्र दूंगा।"1

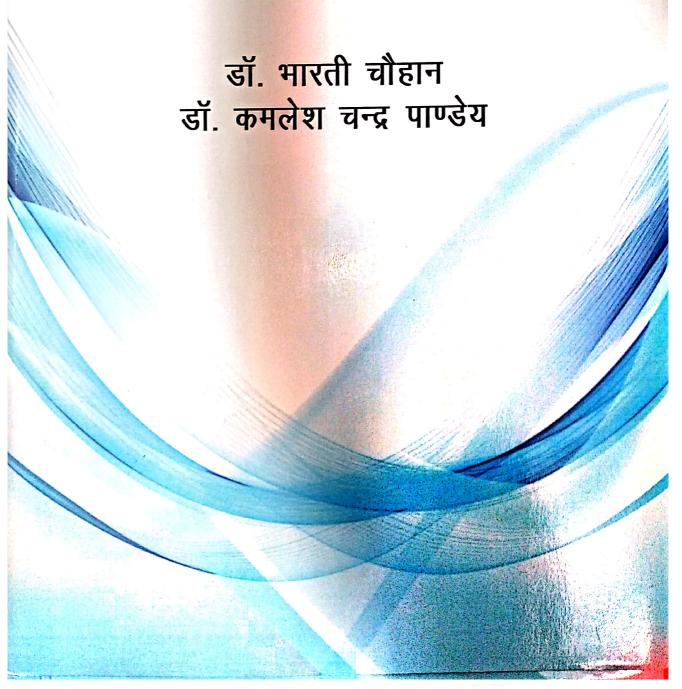
सांख्य दर्शन के अनुसार नारी प्रकृति का स्वरूप है। अर्थात नारी उस परम पिता ईश्वर की सबसे सुन्दर रचना है। स्त्री माता, बहन, पत्नी, और पुत्री के रूप में 21 कुलों का उद्वार करती है, परन्तु वहीं आवश्यकता पड़ने पर वह दुर्गा (शक्ति) का रूप धारण करके असुरों का संहार भी करती हैं, इसीलिये नारी को अर्द्धनारीश्वर भी कहा जाता है, अर्थात वह शिव भी है और शक्ति भी हमारे समाज में कभी भी नारी महत्व को कम नही आंका गया, समाज में हमेशा नारी को महत्वपूर्ण रथान दिया गया। हमारा इतिहास नारी के त्याग-तपस्या की गाथाओं से भरा पड़ा है। समाज के हर क्षेत्र में नारी ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। नारी का कार्य क्षेत्र केवल घर नहीं वरन् सम्पूर्ण संसार रहा है।2

हमारे समाज में नारी को कोमलता, सहनशीलता, धेर्यवान की मूर्ति के रूप में देखा जाता रहा है, परन्तु समाज में समान अधिकार पाने के लिये, स्वावलंबी एवं अटल स्तम्भ बनने के लिए वह रणचण्डी का रूप धारण करने से संकोच नहीं करती। इतिहास ग्वाह है नारी ने भिन्न-भिन्न रूपों में समाज में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है, चाहे वह सीता हो शिवाजी को महान देशभक्त एवं कुशल यौद्धा बनाने वाली उनकी माता जीजाबाई, झांसी की रानी, मैत्रेयी, गार्गी, इन्दिरा गांधी हो या सरोजनी नायडू।3

सत्य ही कहा गया है कि—''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमंते तत्र देवताः''

अर्थात् जिस कुल में स्त्रियों की पूजा होती है उस कुल पर देवता प्रसन्न होते हैं। जिस समाज में नारी को ईश्वर के समतुल्य माना जाता हो वहीं उस समाज में नारी के साथ भेद-भाव और अत्याचारों की लम्बी कतार भी खड़ी दिखाई देती है। हमारे समाज में नारी की रिथित सदैव एक समान नहीं रही वरन् समय के साथ-साथ

दक्षिणी पुशियाई प्रशांत क्षेत्र के स्त्रॉतेजिक वातावरण में भारतीय वैदेशिक सम्बन्ध



अनुक्रमणिका

प्राव	क	थन	(vii)
	1.	वैश्विक भू राजनीति के दौर में भारत के लिए हिंद	28
		प्रशांत क्षेत्र की प्रासंगिकता —डॉ० भारती चौहान और डॉ० कमलेश चन्द्र पाण्डेय	1
	2.	एशिया महाद्वीप में शांति एवं स्थिरता को खतरा (सुरक्षा के परिपेक्ष्य में) —डॉ० गोरखनाथ	14
	3.	अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के सन्दर्भ में कौटिल्य के विचारों की प्रासंगिकता —डॉ० बिरेन्द्र सिंह जयाड़ा	22
	4.	भारतीय विदेश नीति की अवधारणा और दक्षिण एशियाई पड़ोसी देश —डॉ० आरती यादव	31
	5.	भारत—नेपाल सम्बन्धों के मध्य कालापानी विवाद —डॉ० भारती चौहान	46
	6.	भारत—रूस दोस्ती का नया दौर तथा भारतीय सुरक्षा —डॉ० कमलेश चन्द्र पाण्डेय और	57
	7.	डॉ० आर० सी० एस० कुँवर शीत युद्धोत्तर काल में भारत की विदेश नीति -डॉ० विजय कुमार	70

- या की स्त्रातेजी और उसका 10. मालद्वीव में चीन की कटनीतिक चाल एवं भारतीय पुरता जा पर प्रभाव
- 11. भारत- नेपाल सम्बन्धः बदलता परिदृश्य
- -डॉ दीपेन्द्र सिंह तोपवाल 12. क्षेत्रीय सहकार के रूप में भारत-म्यांनार सम्बन्ध
- 13. बदलते वैश्विक परिदृश्य में मोदी सरकार की विदेश नीति
- 14. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारत-नेपाल सम्बन्धों में चीन की भूमिकाः भारतीय सुरक्षा पर प्रमाव
- -डॉ० सातीश बन्द्र जोशी और मनोज कामड़ी 15. वर्तमान वैश्विक व्यवस्था में मास्त – अमेरिका
 - -डॉं*७ भरत सिंह चुफात*
- वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारत—चीन सम्बन्धों के नध्य बढ़ता सीमा विवाद
 - -डॉंं) राजेन्द्र सिंह और विनोद ऐसे
- 17. भारत आसियान सम्बन्ध चुनौतियाँ व सनधान –डॉंं) नुकेश कुनार टन्टा
- 18. 21वीं सदी में भारत अफगानिस्तान सम्बच —हिनेश कुमार रायत और डॉ. अर.सी. एव हुँग
- 19. भारतीय विदेश नीति के निर्धारक तव -होंग विदेश विह

- 20. वर्तमान परिदृश्य में भार (शरणार्थियों के विशेष : -राहुल कुमार औ
- 21. एशियाई सुरक्षा के नए -डॉ० योगेश कुम
- 22. 21वीं सदी में भारत—अं –डॉ० मुकेश कुमा

List of Contributors

20. वर्तमान परिदृश्य में भारत—बांग्लादेश सम्बन्ध		
(शरणार्थियों के विशेष संदर्भ में)	220	
–राहुल कुमार और अभिषेक यादव		
21. एशियाई सुरक्षा के नए दशक में भारत-पाकिस्तान सम्बन्ध		
—डॉ० योगेश कुमार		
22. 21वीं सदी में भारत—अमेरिका सम्बन्ध	243	
—डॉ <i>० मुकेश कुमार</i>		
List of Contributors		

वैश्वक भू राजनीति के दौर में भारत के लिए हिंद प्रशांत क्षेत्र की प्रासंगिकता

–डॉ0 भारती चौहान और डॉ0 कमलेश चन्द्र पाण्डेय

हिंद प्रशांत क्षेत्र विगत वर्षों से भू राजनीतिक दृष्टि से विश्व की विभिन्न शक्तियों के मध्य प्रतिस्पर्धा का नया केंद्र बना हुआ है। विश्व व्यापार का सबसे बड़ा एवं व्यस्ततम क्षेत्र होने के कारण विश्व की जीडीपी का 62% योगदान इसी क्षेत्र से हो रहा है। अपनी भौगोलिक एवं सामरिक स्थिति के कारण यह क्षेत्र सर्वाधिक महत्वपूर्ण बना हुआ है।

हिंद प्रशांत क्षेत्र की स्थिति

विश्व के दो बड़े महासागर हिंद महासागर एंव प्रशांत महासागर के कुछ भागों को मिलाकर समुद्र का जो एक भूभाग बनता है वह हिंद प्रशांत क्षेत्र कहलाता है। हिंद महासागर एवं प्रशांत महासागर के सीधे जल ग्रहण में पड़ने वाले देश जिनमें पूर्वी अफ्रीकी तट, हिंद महासागर, पश्चिम एवं मध्य प्रशांत महासागर मिलकर हिंद प्रशांत क्षेत्र बनाते हैं। प्रशांत महासागर का वह

war to see a service of the taken and the second to the

भारत-नेपाल सम्बन्धों के मध्य कालापानी विवाद

–डॉ० भारती ची

भारत का पड़ौसी राष्ट्र नेपाल जिसके साथ हम सामाजिक, आधि सांस्कृतिक, धार्मिक आदि अनेक तरह की परम्पराओं से जुड़े है वह एक पुनः चर्चा के केन्द्र बने हैं। दोनों देशों के मध्य रोटी—बेटी के संबंधों की पहुँची है। यद्यपि दोनों देशों के संबंधों में उतार—चढ़ाव आते रहे हैं लें वर्तमान समय में उत्पन्न सीमा विवाद ने दोनों देशों के मध्य खाई बढ़ा वै भारत की तुलना में नेपाल बहुत ही छोटा राष्ट्र है। आकार की दृष्टि से भारत के मध्य आपस में कुछ अनोखे प्रावधान है जिन्होंने संबंधों को विशेष के मध्य आपस में कुछ अनोखे प्रावधान है जिन्होंने संबंधों को विशेष के है। सीमा प्रबंध की खुली—खुली प्रकृति, निवास, सम्पत्ति का मालिका व्यापार, व्यवसाय में भागीदारी, आने—जाने और कई तरह की चीजों में देशों के नागरिकों के लिये समान अधिकार हैं। 1950 की मित्रता सी आर्टिकल—7 के तहत, दोनों देश एक—दूसरे को विशेष अधिकार हैं। गोरखा राज्य के रूप में 1742 में पृथ्वी नारायण शाह ने नेपाल राज्य की

भारत-चीन के मध्य तिब्बत

–डॉ० भारती चौहान

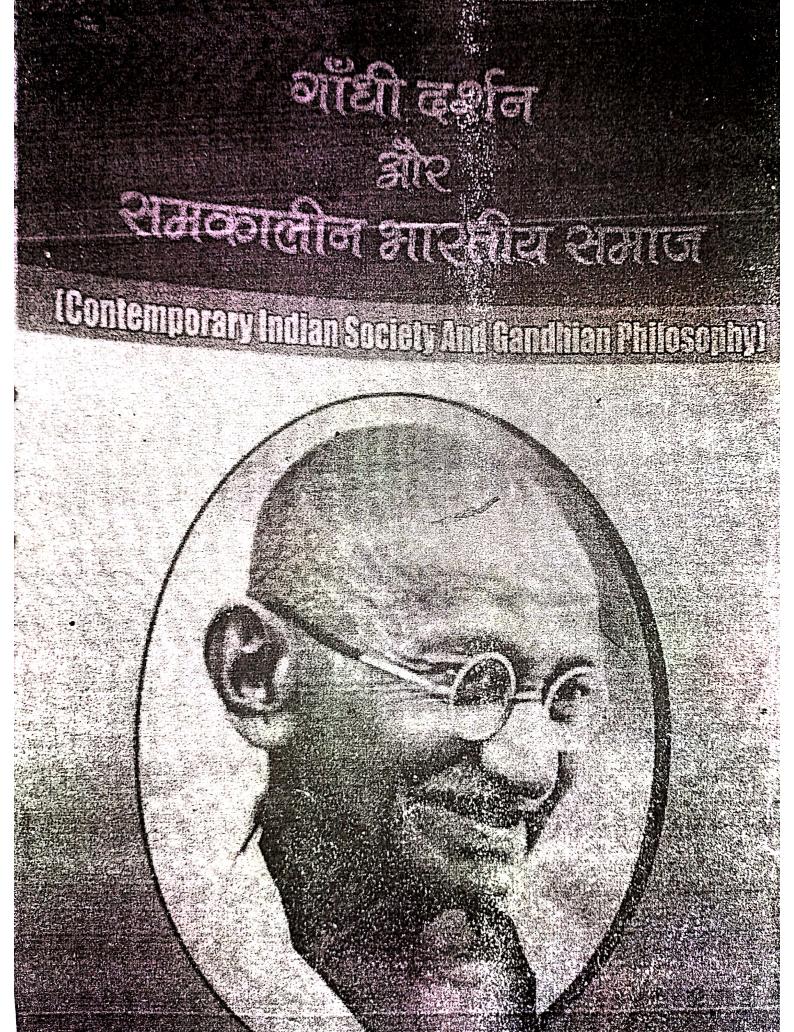
हिमालय में स्थित तिब्बत एक छोटा सा स्वतंत्र राष्ट्र है जो कि भारतीय सुरक्षा के लिए अभेद कवच था अब वह चीन का हिस्सा बन गया है। चीनी आधिपत्य के बाद भी तिब्बत का महत्व भारत के लिए कम नहीं हुआ। प्रारम्भ से ही कोई न कोई शक्तिशाली देश प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से निरन्तर इसे अपने प्रभाव में रखने का प्रयास करता रहा, जो कि इस बात का सूचक था कि इनमें कौन शक्तिशाली है। इसी सदी के प्रारम्भ में यह ब्रिटेन, रूस और चीन तीनों देशों के शासन परिधि से घिरा होने के कारण उनके मध्य शक्ति प्रदर्शन का केन्द्र बना रहा। तिब्बत हमारा पड़ोसी ही नहीं बल्कि उनके साथ हमारे धार्मिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्ध जुड़े है। दोनों की संस्कृति इतनी स्थायी एवं विशाल है, कि उनको सहज रूप से विलुप्त नहीं किया जा सकता है।

विश्व की सर्वाधिक ऊँचाई पर स्थित 32°3° उत्तरी अंक्षाश तथा 86° पश्चिम देशान्तर के मध्य हिमालय और चीन की कुनलिन घाटियों के मध्य स्थित एक छोटा-सा स्वतंत्र राष्ट्र था। जिसका क्षेत्रफल 12,28,40,000 कि.मी. एवं जनसंख्या 27,40,00 है। इसके उत्तर दिशा में चीन, मंगोलिया, पूर्व में तुर्किस्तान दक्षिण में भारत, नेपाल, म्यांमार स्थित है। रूस एवं

बदलते वैश्विक परिदृश्य में मोदी सरकार की विदेश नीति

–कु० अर्चना और डॉ0 भारती चौहान

किसी भी देश की विदेश नीति उसके राष्ट्रीय हितों के अनुरूप दूसरे देशें के साथ आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक तथा सैनिक विषयों पर पालन की जाने वाली नीतियों का समुच्चय है। किसी भी राष्ट्र की स्थिति व वैश्विक परिस्थितियां सदैव एक समान नहीं रहती, इसलिए बदलती अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति में राष्ट्रीय हितों के दृष्टिकोण से समय के अनुसार किसी भी गड़ की विदेश नीति में परिवर्तन होना स्वाभाविक है। यही कारण है कि कोईभी राष्ट्र न तो किसी का स्थायी मित्र होता है और न ही स्थायी शत्रु। स्वतन्त्रत प्राप्त (सन् 1947) करते समय भारत ने जिन परिस्थितियों को ध्यान में रखी हुये अपनी विदेश नीति की रूपरेखा तैयार की थी वह परिस्थितियां अप नहीं है। विगत कुछ वर्षों से भारत की विदेश नीति परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। वर्तमान समय में भारत गुटनिरपेक्षता के अतीत से बाहर निकल हैं। है। हम अपने राष्ट्रीय हितों को देखते हुये विश्व रंगमंच पर अन्य राष्ट्री साथ सम्बन्ध स्थापित कर रहे हैं। भारत विश्व के लगभग सभी मंगी अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है एवं अधिकांश बहुपक्षीय संस्थानों में



0 तेवक

ISBN + 978-93-89809-2

प्रकाशक

साहित्य संचय

के 1050, रती से 14, रहला एक - क्रेरिया विका, दिल्ले 1100an THE T. CONTINUES OF SEA , sta -sainyasarcia, egradica वेषसाहर - www.sahiiyesanchay.com

अम आक्र

भूमाः ब्हारः पास्

राम किन्द्राः प्रत्योगस्य * FEPTS, THE 14600 77 7 1 100 T 241 20 52

प्रसम् हेस्करण है 2020 ह्म कियाहत है असीर क्

CANAL PARALEM BOARTMA SUAU Control of the Contro

अहिंसा एवं कान्ति स्थापना से सत्तर्थ है महातमा शोधी के विद्यार **建全角油、南西土土产** A Hangara and Constant of the Contracts of the particular substitution arce of creations in our displaced with exposure the source The state of the s with the state of the control of the section of the The state of the s A STATE OF THE STA Par and 6.5. Aprailipes but his allest strike in someth e salatado de la estada es a distribute dell'altrol and the second of the second o CONTRACT OF SECURITIES gerenter representation and the second A STANCOSAND IN MARCO VICTOR red and her, or his feet and her 对 1. 性的 1. 型的 2. 是种药2. 用**以** THE RESERVE TO THE STATE OF THE ne pietrus de documentos

water a dam from any maps the production of the second

With King Kinds Wastan

The Day His 1972 of the Fig. of State of

सार्क देशों की राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक संस्कृति में भारत का योगदान

संपादक

डॉ. नीशू कुमार सहायक आचार्य/अध्यक्ष राजनीति विज्ञान विभाग, चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौर, हरिद्वार, उत्तराखण्ड



नालंदा प्रकाशन दिल्ली



अनुक्रमणिका

	전 : [2]	
	भूमिका	\boldsymbol{v}
1.	चीन-पाक आर्थिक गलियारे का भारत की सुरक्षा पर प्रभाव रविन्द्र कुमार	1
2.	प्राचीन भारत-नेपाल के मध्य राजनीतिक सम्बन्ध : एक तुलनात्मक अध्ययन डॉ. दुष्यंत कुमार शाह	9
3.	नागरिकता संशोधन अधिनियम : एक मिथक एवं वास्तविकता गंगादास सिंह	15
4.	महिलाओं की राजनैतिक सहभागिता : दक्षिण एशिया में भारत के सन्दर्भ में एक ऐतिहासिक अध्ययन जॉ. हरीश कुमार	22
5.	विमलेश 9/11 के पश्चात दक्षिण एशिया के संदर्भ में अमेरिकी विदेश नीति का अध्ययन	28
6.	भारत-अफगानिस्तान सम्बन्ध का विश्लेणात्मक अध्ययन डॉ. मालती रावत	31
7.	भारत के उत्तर पूर्वी क्षेत्रों में माओवाद एवं आतंक पिकी देवी	36
3.	भूमण्डलीकरण के युग में भारत और पड़ोसी राष्ट्र डॉ. रामचन्द्र सिंह	40
) .	नरेन्द्र कुमार	48
7.	डॉ. रेखा नौटियाल	

10. भारत एक महाशक्ति के रुप में क्षेत्रिय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर	51
राजेश कुमार	
डॉ. सीमा देवी	61
11. आतंकवाद : संकल्पना एवं प्रकृति	
डॉ. सद्गुरू पुश्पम् 12. 21वी शताब्दी में भारत-रूस के रक्षा, आंतरिक एवं राजनैतिक संबंध : एक	71
अवलोकन	
डॉ. दिप्ती कौशिक	
विशाल कुमार लोधी	79
13. भारत-श्रीलंका सम्बन्धों में तमिल समस्या	
A-A-r ZZ	83
14. श्रीलंका में नृजातीय संघर्ष एवं भारत-श्रीलंका संबंध	
	91
सत्येन्द्र सिंह 15. श्रीलंका में चीन का हस्तक्षेप एवं प्रभाव : भारतीय सुरक्षा के संदर्भ में	
डॉ. विकास शर्मा	
प्रो. भारती चौहान	97
16. China's Belt Road Initiative: Implication for India	
	108
17. Civil Amendment Act: A Myth or Reality	
Dr. Kapender Singh	

15.

श्रीलंका में चीन का हस्तक्षेप एवं प्रभाव: भारतीय सुरक्षा के संदर्भ में

डॉ. विकास रामि प्रो. भारती चौहान**

परिचय

भारत व श्रीलंका के संबंध अत्यंत प्राचीन तथा ऐतिहासिक है, ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में श्रीलंका में भारतीय सम्राट अशोक के द्वारा बौद्ध धर्म की शुरुआत की गई। उसके उपरान्त श्रीलंका और भारत दोनों ही ब्रिटिश शासन के अधीन थे। दोनों देशों के मध्य पच्चीस सौ वर्षों से लोगों, संस्कृति, धर्म तथा व्यापार का आदान-प्रदान होता रहा है। वर्ष 1947 से भारत ब्रिटिश शासन से मुक्त हुआ था तथा अगले वर्ष 1948 में श्रीलंका को स्वतंत्रता प्राप्त हुई दोनों देशों ने स्वतंत्रता के बाद गुटनिरपेक्षता की नीति को अपनाया।

श्रीलंका, दक्षिण एशिया में हिंद महासागर के उत्तरी भाग में स्थित एक द्वीपीय देश है। इसका क्षेत्रफल 65,610 वर्ग किलोमीटर है। भारत-श्रीलंका सीमा एक समुद्री सीमा है। मन्नार की खाड़ी और पाक जलडमरू मध्य (30 किलोमीटर चौड़ा छिछला सागर) भारत को श्रीलंका से अलग करते हैं। दोनों देशों का एक दूसरे से सबसे निकटतम स्थान तमिलनाडु (भारत) में धानुशकोड़ी तथा जाफना (श्रीलंका) में तलाई मन्नार है।

^{*}रक्षा, स्त्रॉतेजिक एवं भू राजनीतिक अध्ययन विभाग, हे.न.ब. गढ़वाल(केन्द्रिय)विश्वविद्यालय, श्रीनगर(गढ़वाल) उत्तराखण्ड। **रक्षा, स्त्रांतेजिक एवं भू राजनीतिक अध्ययन विभाग, हे.न.ब. गढ़वाल(केन्द्रिय)विश्वविद्यालय, श्रीनगर(गढ़वाल) उत्तराखण्ड।

भारतीय समाज में महिला संशक्तिकरण सम्पूर्ण समाज का उत्थान

संपादक डॉ. नीशू कुमार सहायक आचार्य/अध्यक्ष राजनीति विज्ञान विभाग, चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा हरिद्वार, उत्तराखण्ड

डॉ. तीर्थ प्रकाश एसोसिएट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान विभाग राजकीय महाविद्यालय मंगलौर हरिद्वार, उत्तराखण्ड।



नालंदा प्रकाशन दिल्ली ISBN: 978-93-91018-06-1

© संपादक



प्रकाशक

नालंदा प्रकाशन

C-5/189 यमुना विहार, दिल्ली-110053

1: +9315194807, 9968082809

⊠: nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण- 2021 अक्षर संयोजक दीपिका शर्मा, दिल्ली-110094

भुद

ट्राईडेंट इंटरप्राइजेज, दिल्ली-110032

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। लेखक की लिखित अनुमित के बिना इसके किसी भी अंश की फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी के माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनर्त्यादित अथवा संचारित- प्रसारित नहीं किया जा सकता। इस पुस्तक में उद्धरित विचार लेखक के अपने हैं।

Bhartye Samaj Me Mahila Sashktikaran Sampurn Samaj Da Utthan

by Dr. Nishu Kumar

Dr. Tirth Parkash

अनुक्रमणिका

· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	भूमिका	eN .	υ
7	AC 11 AND 127 T AL	69 SF 8	an A
1.	महिला सशक्तिकरण : भारतीय समाज में महिलाओं की भूमिका		a W
整	डॉ. नीशू कुमार		t t
2.	भारतीय महिलाओं का संशक्तिकरण : जायज अधिकारों की मांग		6
8	डॉ. तीर्थ प्रकाश		F5
3.	सतत् विमर्श की ओर देखती भारतीय महिलाएं		10
€	आशीष रावत		
4.	भारतीय महिला सशक्तिकरण में बौद्ध सांस्कृतिक योगदान		14
	बुद्धिराम		
5.	नारी संघर्ष : इतिहास से वर्तमान तक		25
	डॉ. फैजान अहमद		
6.	भारतीय समाज में महिलाओं की परिस्थितिः एक अवलोकन		33
	गंगादास सिंह,		
	कुमकुम सागर		
7.	भारतीय सशस्त्र सेनाओं में महिलाओं का योगदान : एक विश्लेषण	6	41
	डॉ. भारती चौहान		
1 mas 14	डॉ. कमलेश चन्द्र पाण्डेय	NEW YORK	

भारतीय संशस्त्र सेनाओं में महिलाओं का योगदान : एक विश्लेषण

डॉ. भारती चौहान डॉ. कमलेश चन्द्र पाण्डय**

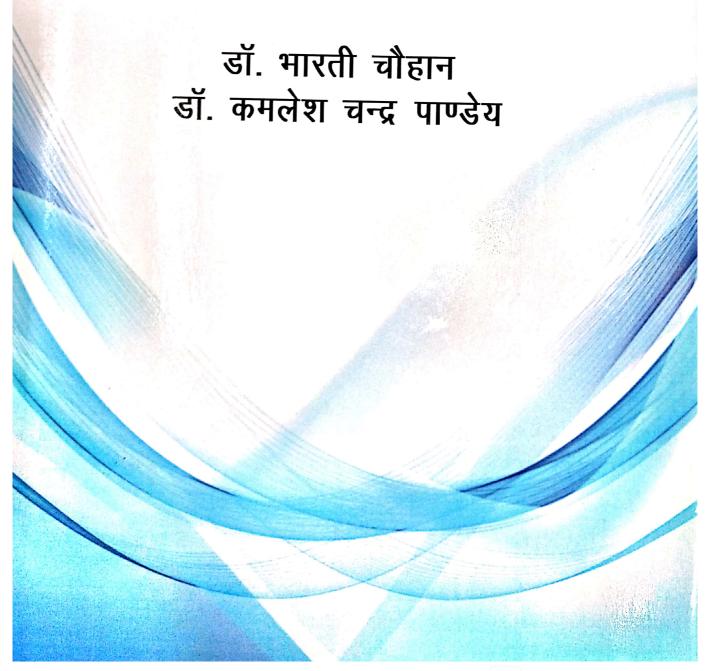
किसी भी राज्य की स्वतंत्रता और प्रभुसत्ता को बनाए रखने के लिए सशस्त्र सेनाओं का रखना राज्य का एक आवश्यक कार्य माना जाता है। पुराणों में वर्णित है कि स्त्रिया युद्ध भूमि में भी अपनी वीरता का परिचय देती थी। त्रेतायुग में श्रीराम के जन्म से पहले, उनकों माता कैकेरी पिता दशस्य के साथ न केवल युद्ध भूमि में जाती थी, बिल्क शोर्य का परिचय युद्ध भूमि में देती थी। मां दुर्गा और मां काली ने ऐसे कई देत्यों का संहार किया। जिनका वश स्वय देवता भी नहीं कर सकते थे। ऐसे कई उदाहरण है जो हमारे धर्म ग्रंथों में मोजूद है। यह सिद्ध करते हैं कि पोराणिक काल में स्त्रियां बाहुबल में पुरुषों की ही तरह श्रेष्ठ थी। किसी भी राष्ट्र के परम्परा और संस्कृति उस शब्द की महिलाओं से परिलक्षित होती है। महिलाएं समाज की खनात्मक शक्ति होती हैं। नारी की सुदृढ़ एवं सम्मानजनक स्थिति एक उन्नत समृद्ध व मजबूत समाब की खोतक है। जैसा कि प्राचीन धर्म ग्रंथों में कहा गया है-

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। **यत्रतास्तु न पू**ज्यन्ते सर्वास्तत्रालाः क्रियाः। है

विकेता, स्थारिकक पूर्व मू, राजनीतिक अध्ययन विभाग, विकास परिसर, हे पंचार के देशीय दिश्यदियालया, सीयपूर सदयान, काराव्यक्र

[े] की की प्रथा (1995) (1996) (1996) अने लिखन एवं सूर्य को बीचन अध्ययन दियात, विकृत परितर् हें के कम केन्द्रीय प्रत्योक्ष्मालह, जीवगर सङ्ग्रास, इन्द्रसायण्य ।

दक्षिणी पुश्चियाई प्रशांत क्षेत्र के स्त्रॉतेजिक वातावरण में भारतीय वैदेशिक सम्बन्ध



अनुक्रमणिका

प्राक्कथन	(vii)
 वैश्विक भू राजनीति के दौर में भारत के लिए हिंद प्रशांत क्षेत्र की प्रासंगिकता —डॉ० भारती चौहान और डॉ० कमलेश चन्द्र पाण्डेय 	1
 एशिया महाद्वीप में शांति एवं स्थिरता को खतरा (सुरक्षा के परिपेक्ष्य में) —डॉ० गोरखनाथ 	14
 अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के सन्दर्भ में कौटिल्य के विचारों की प्रासंगिकता —डॉ० बिरेन्द्र सिंह जयाड़ा 	22
 भारतीय विदेश नीति की अवधारणा और दक्षिण एशियाई पड़ोसी देश —डॉ० आरती यादव 	31
5. भारत—नेपाल सम्बन्धों के मध्य कालापानी विवाद <i>—डॉ० भारती चौहान</i>	46
6. भारत—रूस दोस्ती का नया दौर तथा भारतीय सुरक्षा <i>–डॉ० कमलेश चन्द्र पाण्डेय और</i>	57
<i>डॉo आरo सीo एसo कुॅवर</i> 7. शीत युद्धोत्तर काल में भारत की विदेश नीति <i>–डॉo विजय कुमार</i>	70

3

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के सन्दर्भ में कौटिल्य के विचारों की प्रासंगिकता

-डॉ0 बिरेन्द्र सिंह जयाड

प्राचीन भारत के महान दार्शनिक कौटिल्य के विचारों का बदलते अंवर्राष्ट्रीय परिवर्तित परिवेश में आज भी महत्वपूर्ण स्थान है। चाणव्य विष्णुगुत अथवा कोटिल्य का जन्म 371 बी.सी. में एक ब्राह्मण परिवार में इंबा। कोटिल्य का वास्तविक नाम विष्णुगुप्त था, जिसका जिक्र कामन्दर्क ने नीतिसार में उपलब्ध है। चणक के पुत्र होने के कारण उन्हें चाणव्य एवं प्रिटेस राजनीतिज्ञ (या कुटिल गोत्र) होने के कारण उन्हें कौटिल्य नाम के प्राचीतिज्ञ (या कुटिल गोत्र) होने के कारण उन्हें कौटिल्य नाम के प्राचीतिज्ञ (या कुटिल गोत्र) होने के कारण उन्हें कौटिल्य नाम के प्राचीतिज्ञ (या कुटिल गोत्र) होने के कारण उन्हें कौटिल्य नाम है।

कुछ प्राचीन एवं मध्य कालीन ग्रन्थों में आचार्य कौटिल्य के 16 पर्यायवर्षि नामों का उल्लेख मिलता है।जिनमें विष्णुगुष्त, कौटिल्य, द्रामिल, अंपूर्व वात्सायन, मल्लनाग, पिसल स्वामी, वराणक, बल, वरुरूचि, पुर्नवस्, कात्याय महात्योतिषी, माणवक, विष्णुशर्मा और चाणक्य है। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों

अर्थशास्त्र कौटिल्य 400 ई. पूर्व के लगभग ह् समाहित है। इसमें राज नीतियां, कानून व्यवस्था सम्बन्धों की रचना एवं

विशिष्ठ श्रोतों के अ मगध के राजा महानन्द आमन्त्रित किया, लेकिन अपमानित किया गया की की चोटी खोलकर प्रति देंगे तब तक वह चैन उ

इसी प्रकार नन्द राज गद्दी का उत्तरदा करने के उद्देश्य से च चन्द्रगुप्त मौर्य के महामं के आक्रमण के कारण चाहते थे।²

उन्होंने युद्ध सम्बन् संगठन, शस्त्रास्त्रों, यु राष्ट्रनीति से सम्बन्धित

कौटिल्य की विदेश

प्राचीन समय में रा करते थे, जिनमें आर्थि सांस्कृतिक आदि प्रमुख में परिवर्तन लाना राष्ट्रि प्राप्ति हेतु अपने आचार-है। कोई भी देश अपने र निर्धारण करता है।

मालद्वीव में चीन की कूटनीतिक चाल एवं भारतीय सुरक्षा

-डॉ० बिरेन्द्र सिंह जयाडा

मालद्वीव दक्षिण एशिया में एक स्थिर प्रगतिशील छोटा सा देश है जो वर्तमान समय में दक्षेस (SAARC) का सदस्य राष्ट्र है। ईसा से 500 वर्ष पूर्व से यहां लोग निवास करते आ रहे हैं। हिन्द महासागर स्थित यह द्वीप 298 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला है। भारत के दक्षिण पश्चिम में 740 पूर्वी देशान्तर तथा 700 उत्तरी अक्षांश के मध्य स्थित है। मालद्वीव 1200 से भी अधिक प्रवाल द्वीपों का समूह है, जो कि 1965 में स्वतंत्र हुआ। यहां छोटे बड़े द्वीपो में केवल 200 द्वीपों पर ही आबादी बसी है। शेष द्वीप निर्जन हैं। यहां 28 वर्ग किलोमीटर भूमि कृषि योग्य है पर्यटन ही यहां आय का एकमात्र श्रीत है।3

ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाय तो प्राचीन काल से यहां बौद्ध मतावलम्बी ही अपने धर्म को प्रधानता देते रहे। 1153 ई0 में इस देश में इस्लाम धर्म की स्थापना हुई। फारस व अरब देशों के व्यापारियों का शताब्दियों से यहां नाता रहा, जिसका प्रभाव धीरे-धीरे मालद्वीप के जीवन पर पड़ता गया। इस्लामिक संरक्षण के पश्चात् 1959 में मालद्वीव लोकतांत्रिक गणराज्य बना तत्पश्चात्

Sinews of India's Internal Security in 21st Century

Editors

Prof. Prashant Agarwal

Head

Department of Defence and Strategic Studies University of Allahabad

Dr. Sanjay Kumar

Associate Professor Department of Defence Studies Meerut College, Meerut



in association with



Advance Research Institute for Development of Social Science-ARIDSS, Meerut

Scanned with CamScanner



THE INDIAN OCEAN

A New Epicentre of India-China Rivalry Issues & Aspects

-Editors-

Dr R. S. Pandey Dr Vishwa Deepak Tripathi Dr V.CH. N. K. Srinivasa Rao



2019



Perspective on India's Internal Security: Issues & Challenges

Deepak Kumar
Associate Professor, Department of Defence and
Strategic Studies, H.N.B. Garhwal University Campus
Badshahithaul, Tehri, Garhwal

will the greatest future security threat to India be from inside or outside the country? Because prudence advises that to be forewarned is forearmed. Sun Tzu had long back (6th cent B.C.) said; "If you know your enemies and know yourself, you will not be imperiled in a hundred battles, if you do not know your enemies, but do know yourself, you will win one and lose one; if you do not know your enemies nor yourself, you will be imperiled in every single battle." Therefore it is essential that we know our strengths & weaknesses and objectively as well as realistically analyze the threats - external & internal, covert & overt, state & non-state, posed to India. Experts are of the opinion that threats & challenges to internal security are far greater and that India faces "war within its borders".

India is today an astounding study in contrasts. International pundits have predicted a "global power shift" with a "transfer of power from West to East", and some have already anointed India, as one of the "great powers" of the proximate future.² Among the Indian elite, there is a surging confidence, backed by sustained growth of the economy. Despite the global meltdown of 2008, India has sustained a 6%-7% growth rate, notwithstanding the widespread contraction of economies and

	151
2. Conceptualising Environmental Security	167
De Comiro Kumar	
13. Energy Security: A Road Map for India	181
Dr Neelam Kumari	
14. India's Environmental Security Policy	
De Diemotra Dwivedi	187
15. Naxalism: Today's India's Burning Internal	
Security Issue	198
Dr. A.K. Dixit	170
16. Naxal Violence: Internal and External Linkages	- W11
Dr. Bina Rai	ges 211
Dr. Bina Rai 17. Perspective on India's Internal Security: Issues & Challen	400
Deepak Kumar	223
18. Naxalism and India's Internal Security Problem	es 1987
Dr. Krishna Nand Panday 19. India's Internal Security: Challenges and Dimensions	241
19. India's Internal Security; Chancing of the	
Dr. Krishna Nand Shukla 20. Naxalism as a Threat to Human Security: Special	
- Chatticoath	260
Reference of Chhattisgarh Dr. Rajeev Rathore & Dr. Gulab Chandra Lalit	*
Naval threats in the 21st Century	272
Dathi & Dr. Suman	
Problem: Understanding the issue,	•
Guallanges and Diagnostic Approach	289
Dr. Mohammad Samir Hussain	
•	316
Index	

THE INDIAN OCEAN

A New Epicentre of India-China Rivalry Issues & Aspects

-Editors-

Dr R. S. Pandey Dr Vishwa Deepak Tripathi Dr V.CH. N. K. Srinivasa Rao



2019



Perspective on India's Internal Security: Issues & Challenges

Deepak Kumar
Associate Professor, Department of Defence and
Strategic Studies, H.N.B. Garhwal University Campus
Badshahithaul, Tehri, Garhwal

here is a genuine query in every discerning Indian citizen's mind-Will the greatest future security threat to India be from inside or outside the country? Because prudence advises that to be forewarned is forearmed. Sun Tzu had long back (6th cent B.C.) said; "If you know your enemies and know yourself, you will not be imperiled in a hundred battles, if you do not know your enemies, but do know yourself, you will win one and lose one; if you do not know your enemies nor yourself, you will be imperiled in every single battle." Therefore it is essential that we know our strengths & weaknesses and objectively as well as realistically analyze the threats - external & internal, covert & overt, state & non-state, posed to India. Experts are of the opinion that threats & challenges to internal security are far greater and that India faces "war within its borders".

India is today an astounding study in contrasts. International pundits have predicted a "global power shift" with a "transfer of power from West to East", and some have already anointed India, as one of the "great powers" of the proximate future.² Among the Indian elite, there is a surging confidence, backed by sustained growth of the economy. Despite the global meltdown of 2008, India has sustained a 6%-7% growth rate, notwithstanding the widespread contraction of economies and

IMPACT OF COVID-19 Pandemic on Health and Livelihood















M.S. Negi Rajesh Bhatt The highly infectious pandemic Covid-19, a contagious disease caused by Severe Acute Respiratory Syndrome Coronavirus-2 (SARS-CoV-2), has caused colossal loss of life and economy across the world. This pandemic has affected many sections of the society and brings new aspects into practice. The virus has turned out to be deranged in terms of the economic activity and loss of human lives. The outbreak of covid-19 brought changes in social and economic life of humans. India, being no exception to this disease, has witnessed humanitarian crisis coupled with worsened inequalities in Indian economiy.

Keeping in view the impact that has been caused by this biological disaster. Department of Geography has prepared a total of ten research papers on aftermath of Covid-19 on several elements of society. The Department has forethought to publish the research papers in form of an edited book entitled Impact of Covid-19 Pandemic on Health and Livelihood.

This mentioned volume presents elucidated papers appraising the influence of novel corona virus on multiple sectors of the society. Also, the mentioned research work has been carried out in various states of India. A geographical analysis of various Himalayan states has been conducted to assess the aftermath of Corona Virus on varied aspects such as tourism and hospitality industry, socio-economy, education sector, entrepreneurship, health sector and psychological modification in human behavior. This document is believed to aid in a better understanding of how COVID 19 has impacted various elements of our society and its future implications.

This research work has been carried out with coordinates of orders of the research scholars of Geography department and the local response to the respective department to be the coordinated effort towards the completion of this document.



PATHAK PUBLISHER AND DISTRIBUTORS

E6/33c & 34 Ground Floor, Sangam Vihar

New Delhi-110080

E-mail: pathakppd@gmail.com M.: 9667766461, 9910469931 Price ₹ 1500/-



Contents

Prefa		vii
	of Contributors	ix
	Geographical Study of Adaptation and Adjustment During Covid 19 in Rural and Urban Areas of Garhwal Himalaya RAJESH BHATT, M.S. NEGI & SURAJ KUMAR	1-15
2.	Impact Assessment of Covid-19 on Entrepreneurs: A Case Study of Kirtinagar Block (Tehri Garhwal, Uttarakhand) SUNIL SINGH & M. S. NEGI	16-29
3.	The Geographical Study of Impact of Covid-19 on Education Sector : A Case Study of Clement Town GAURAV & M.S. PANWAR	30-40
4.	Impact of Covid-19 Pandemic on Education and Health Sector: A Geographical Study of Ramnagar Town Pooja Bharti, M.S.Negi & Rajesh Bhatt	41-61
5.	Impact of SARS-COV 2 (Novel Corona Virus) in A Srinagar Garhwal as a Geographical Perspective Veer Singh, Anita Rudola & Raiz Ahmed	62-81
6.	Impact of Covid-19 Pandemic on Healthcare System: A Case Study of Raxaul Town DEEPALI GUPTA & B. P. NAITHANI	82-99

Impact Assessment of Covid-19 on Entrepreneurs: A Case Study of Kirtinagar Block (Tehri Garhwal, Uttarakhand)

Sunil Singh and M. S. Negi

Abstract: The current COVID-19 pandemic creates a global threat leading to significant socio-economic and psychological impacts. Simultaneously, the whole world appreciates the excellent work performed by health care workers in the health sector and small and large entrepreneurs involved in supplying, distributing, and retailing food goods during the lockdown. In this research paper, we have analyzed the impact of Covid-19 on small and large entrepreneurs of the Kirtinagar block of Tehri Garhwal district. To fulfill this study, we surveyed eight markets (Kirtinagar, Chauras, Madi, Maletha, Thapli, Dang chauras, and Khori) with total 100 entrepreneurs, out of which 60 small and large entrepreneurs responded. The study was conducted from October 2020 to January 2021. Data analysis has been done in Excel and SPSS software. At a critical juncture in the pandemic, when both the progress of Covid-19 and the government response were uncertain, the timing of this survey allows us to better understand the challenges and expectations that entrepreneurs face. The finding indicates that the Covid-19 pandemic has caused major derangement among the entrepreneurs. Across the entire sample, 86.7% of entrepreneurs were temporarily closed because of instructions by authorities, except for medical shops and vegetable shops (13.3%) during the strict lockdown.

Keywords: Covid-19, Entrepreneurs, Impact assessment, Kirtinagar, SPSS, Economy.

The Geographical Study of Impact of Covid-19 on the Education Sector: A Case Study of Clement Town

Gauray¹, M. S. Panwar²

Research Scholar, H. N. B. Garhwal (A Central University) University, Srinagar Garhwal
 Professor, H. N. B. Garhwal (A Central University) University, Srinagar Garhwal

Abstract

The sudden outbreak of Covid-19 led the world, to a curfew-like lockdown. The rising Death rateput fear in the mindset of the people which influenced physical distancing. The Emergent scenario of social distancing led to the transformation of On-Site Teaching-Learning services into On-Line services. However, the transformation kept the world going on but it brings a number of hurdles. In this case study, of Clement Town, the study presents that teachers & students have faced multiple challenges in the On-Line Teaching-Learning system. The quality of On-Line Teaching-Learning System is deeply affected by its various variables. Along with the pandemic, online teaching services are boosted.

Keywords: Covid-19, Education, Students, Teachers, On-Site, On-line, Teaching-Learning

Introduction

The impact of pandemic Covid – 19 has taken over almost all continents in the world. The first case was identified in Wuhan, China, in December 2019. The disease has since spread worldwide, leading to an ongoing pandemic. The first case of COVID-19 in India, which originated from China, was reported on 30 January 2020. The outbreak has been declared an epidemic in more than a dozen states and union territories, where provisions of the Epidemic Diseases Act, of 1897 have been invoked, leading to the temporary closure of educational and commercial establishments. All tourist visas were suspended in March, as many of the earliest confirmed cases were individuals who had traveled from foreign countries.

Covid - 19 has put uncertain challenges for students but opened up other un-proposed opportunities as well. The rapid spread of virus led the whole world towards a deterministic emergent curfew-like lockdown which dynamically promoted possibilistic Virtual or Online education system over Physically influenced On-Site education system. These sudden variables put a number of complexities & challenges in front of students as well as teachers.

According to UNESCO, the COVID-19 pandemic has interrupted classroom learning for at least 9 out of 10 students worldwide, and about half of the students worldwide have no access to online teaching (826 million learners worldwide have no access to a computer) (UNESCO 2020) This study focuses on the impact of Covid-19 on the quality of Education. Such as Zoom, Google Meetings etc. have become a pioneer in online learning & teachings which encompasses the possibilities in future education system.

Study Area

Clement town is a Category-II cantonment, and deemed municipality administered by a cantonment board under the Ministry of Defense. It is located in district of Dehradun, Uttarakhand. The Clement Town city is divided into 7 wards for which elections are held every 5 years.

ADVANCES IN REMOTE SENSING TECHNOLOGY AND THE THREE POLES



EDITED BY

MANISH PANDEY • PREM C. PANDEY
YOGESH RAY • AMAN ARORA
SHRIDHAR D. JAWAK • UMA K. SHUKLA

Esc | to exit full screen Press 18.4.4.1 Graphic Mea 18.4.4.2 Graphic Stan 18.4.4.3 Graphic Skewness 275 18.4.4.4 Graphic Kurtosis 275 18.4.5 Inter-Relationship of Size Parameters 275 18.4.6 CM Plot 278 18.5 Discussion and Conclusions 279 Acknowledgments 280 References 280 19 Himalayan River Profile Sensitivity Assessment by Validating of DEMs and Comparison of Hydrological Rahul Devrani, Rohit Kumar, Maneesh Kuruvath, Parv Kasana, Shailendra Pundir, Manish Pandey, and Sukumar Parida 19.1 Introduction 283 19.2 Study Area 284 Methodology (LSDTopoTools) 284 19.3 Details of DEM Datasets Used 286 19.4 ALOS-PALSAR 286 19.4.1 19.4.2 ASTER 286 19.4.3 CartoDEM 287 19.4.4 Copernicus DEM 287 19.4.5 NASA DEM 287 19.4.6 SRTM 289 19.5 Result and Discussion 289 19.5.1 Assessment of DEMs Generated Watershed Boundary and Slope 289 19.5.2 Sensivity of Longitudinal River Profiles Using Different DEMs 289 19.6 Conclusion 295 Acknowledgments 295 References 295 20 Glacier Ice Thickness Estimation in Indian Himalaya Using Geophysical Methods: A Brief Review 299 Aditya Mishra, Harish Chandra Nainwal, and R. Shankar 20.1 Introduction 299 20.2 Geophysical Methods for Estimation of Glacier Ice Thickness 300 20.2.1 Gravity 300 20.2.2 Magnetic 300 20.2.3 Resistivity 300 20.2.4 Seismic 300 20.2.5 Ground Penetrating Radar 300 20.3 Geophysical Methods in the Indian Himalaya Region 300 20.4 GPR Surveys in the Debris Covered Glaciers 302 20.5 A Case Study on Debris-Covered Satopanth Glacier 303 20.6 Conclusions and Future Prospects 304 Acknowledgments 304 References 305 21 Landscapes and Paleoclimate of the Ladakh Himalaya 308 Anil Kumar, Rahul Devrani, and Pradeep Srivastava 21.1 Introduction 308

21.2

21.3

21.4

21.2.1

Geology of the Ladakh Himalaya 308

Modern Climatic and Vegetation 311

Karakoram Region 310

Past Climate Variability 310 21.3.1 Early Holocene (~11.7 to 8.2 ka) 310 21.3.2 Mid-Holocene (~8.2-4.2 ka) 310 21.3.3 Late-Holocene (~4.2 ka-Present) 311

20

Glacier Ice Thickness Estimation in Indian Himalaya Using Geophysical Methods

A Brief Review

Aditya Mishra^{1,*}, Harish Chandra Nainwal¹, and R. Shankar²

Department of Geology, H.N.B. Garhwal University, Srinagar Garhwal, Uttarakhand, India, 246174

20.1 Introduction

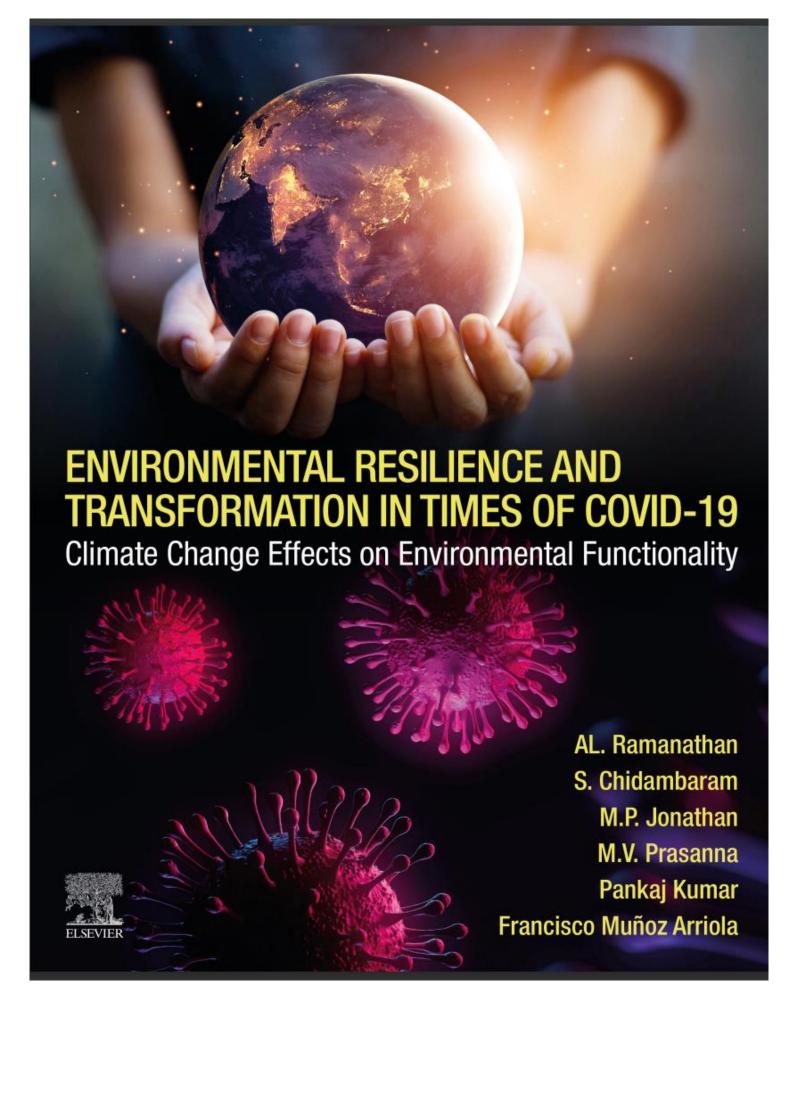
The Himalayan cryosphere is a major reservoir of fresh water and is frequently referred to as the "third pole of the world" and "water tower of Asia" (Immerzeel et al., 2010). The glacier and snow-melt water contributes considerably to the runoff of the major river system (i.e., Indus, Ganga, and Bramhaputra) of High Mountain Asia and plays a crucial role in regulating the hydrology of the basins (Thayyen and Gergan, 2010; Lutz et al., 2018; Azam et al., 2021). According to Raina and Srivastava (2008), there are 9575 glaciers with an area of 37,466 km² in the Indian Himalayan Region (IHR). In contrast, other studies reported that the total glacier area lies between 22,800 and 25,041 km2 in the Himalayan range, exclusive of Karakoram (Bolch et al., 2012; Kulkarni and Karyakarte, 2014) and 40,775 km² with the glaciers of Karakoram (Bolch et al., 2012). An updated basin-wise compilation of glacier data indicates that the Indus Basin has a maximum glacierized area of 26,530 km², followed by the Bramhaputra (11,381 km²) and Ganga (8066 km²) basins (Kulkarni et al., 2021). The discrepancy in glacier area has resulted from the differences in datasets used, mapped area and followed methodology, and time period by different researchers (Bolch et al., 2019). The recent studies reveal that most of the glaciers in the Himalayan region are retreating and losing mass at heterogeneous rates (Brun et al., 2017; Azam et al., 2018; Shukla et al., 2020; Kulkarni et al., 2021; Mehta et al., 2021; Kumar et al., 2021). Under the accelerating atmospheric warming, shrinking of the mountain glaciers is assumed to become enhanced in the future (Hock et al., 2019). A model analysis forecasts that if the global temperature rises to 1.5°C above pre-industrial levels, about 60% of the total ice mass of the present day in High Mountain Asia will be lost by the end of this century (Kraaijenbrink et al., 2017).

Ice thickness is one of the fundamental inputs in knowing the volume of the glacier. Glacier volume determines the amount of water available in frozen form, which is important for projecting river runoff and potential sealevel rise under the changing climate scenario (Farrinotti et al., 2019). However, volume estimates in the Himalayan regions are highly uncertain due to limited field-based ice-thickness measurements (Azam et al., 2018; Bolch et al., 2019; Kulkarni et al., 2021). Apart from the field-based ice-thickness measurements, volume can be determined by empirical relations (Chen and Ohmura, 1990; Bahr et al., 1997; Cogley, 2011) and numerical models (Farinotti et al., 2009, 2019; Huss and Farinotti, 2012; Linsbauer et al., 2012; Frey et al., 2014; Gantayat et al., 2014; Ramsankaran et al., 2018).

Similar to the consortium on compilation of a worldwide glacier inventory (Pfeffer et al., 2014), an initiative of a world glacier monitoring system (WGMS) was taken to compile the glacier thickness database (GlaThiDa) at global scale (Gärtner-Roer et al., 2014). The mean and maximum ice-thickness data of glaciers and ice caps are compiled in a systematic way with their metadata and source information (Gärtner-Roer et al., 2014). In the recent version (GlaThiDa v3), 3,854,279 thickness measurements distributed over roughly 3000 glaciers were compiled (Welty et al., 2020). Out of the total, only two glaciers (Chhota Shigri and Dokriani) of the entire HK range are added to the database. In earlier comprehensive reviews (Bolch et al., 2012; Kulkarni et al., 2021), the efforts of

² The Institute of Mathematical Sciences, Chennai, Tamil Nādu, 600113

Corresponding author



Contents vii

 COVID-19 lockdown impacts on biochem and microbiological parameters in souther Indian coast 		 A safe and effective sample collection method for assessment of SARS-CoV-2 in aerosol samples 		
HENCIYA SANTHASEELAN, VENGATESHWARAN THASU DINAKARAN, SANTHOSH GOKUL MURUGAIAH, MUTHUKUMAR KRISHNAN, ARTHUR JAMES RATHINAN	4	NAZIMA HABIBI, MONTAHA BEHBEHANI, SAIF UDDIN, FA AL-SALAMEEN, ANISHA SHAJAN, FARHANA ZAKIR	DILA	
		17.1 Introduction	173	
14.1 Introduction	143	17.2 Novel aerosol sampling method	174	
14.2 Major coastal activities influenced by COVID-19		17.3. Trizol versus phosphate buffer solution as		
pandemic	144	collection medium	174	
14.3 COVID-19 lockdown impacts of biochemical and		17.4 Next generation-based applications	177	
microbiological parameters on South Indian coasts	145	17.5 Conclusions	177	
14.4 Effects of gas emissions with coastal water quality	147	References	177	
14.5 Refusing on phytoplankton biomass and NO ₂		10.14	^	
emissions	147	Meteorological parameters and COVID-1	9	
14.6 Conclusion	148	spread-Russia a case study		
References	149	SHANKAR K., GNANACHANDRASAMY G., MAHALAKSHM DEVARAJ N., PRASANNA M.V., CHIDAMBARAM S., THILAGAVATHI R.	Π М.,	
		18.1 Introduction	179	
Air and water quality: Monitoring, fate,		18.2 Study area	180	
transport, and drivers of socio-		18.3 Methodology	183	
environmental change		18.4 Results and discussion	183	
		18.5 Conclusion	187	
15. Air quality index and criteria pollutants in		References	188	
ambient atmosphere over selected sites:				
Impact and lessons to learn from COVID	19	Short-Term resilience and transformation	L	
SUSHIL KUMAR, SUDESH YADAV		of urban socioenvironmental systems to COVID-19 lockdowns in India using air		
15.1 Introduction	153	quality as proxy		
15.2 Data source and data collection point	155	JAGRITI JAIN, FRANCISCO MUÑOZ ARRIOLA, DEEPAK KH	ARE	
15.3 Results	157	, routing in a reacco morror random, penna an		
15.4 Summary	161	19.1 Introduction	191	
Acknowledgments	161	19.2 Area of study and its components	193	
References	161	19.3 Conceptualization of NAMUSS resilience to COVID-19	194	
16. Study of the aerosol parameters and radiat	ive	19.4 Methodology	197	
forcing during COVID-19 pandemic over	100	19.5 Results and discussion	198	
		19.6 Conclusion	204	
Srinagar Garhwal, Uttarakhand		Acknowledgements		
ALOK SAGAR GAUTAM, HARISH CHANDRA NAINWAL, R.S. NEGI, SANJEEV KUMAR, KARAN SINGH		References	204 204	
16.1 Introduction	163	20. Covid-19 Pandemic-changes in the conte	ext of	
16.2 Site description and meteorology	164	global environment and lessons learned		
16.3 Result and discussions	165	NEHA JAISWAL, S. JAYAKUMAR		
16.4 Conclusions	170			
Acknowledgments	170	20.1 Introduction	207	
Abbreviation List	170	20.2 The pros and cons of Covid-19 worldwide	209	
References	171	20.3 Lessons learned from the current crisis	217	

16

Study of the aerosol parameters and radiative forcing during COVID-19 pandemic over Srinagar Garhwal, Uttarakhand

Alok Sagar Gautam^a, Harish Chandra Nainwal^b, R.S. Negi^c, Sanjeev Kumar^a, Karan Singh^a

Department of Physics, HNB Garhwal University, Srinagar Garhwal, Uttarakhand, India
Department of Geology, HNB Garhwal University, Srinagar Garhwal, Uttarakhand, India
Department of Rural Technology, HNB Garhwal University, Srinagar Garhwal, Uttarakhand, India

16.1 Introduction

Atmospheric aerosols are the tiny particles in solid/liquid/mixed phases within the ranges of 10⁻³ to 100 µm (Després et al., 2012). Aerosol has a significant influence on the radiation budget and atmospheric hydrological cycle (Ramanathan et al., 2001). The best mechanism of radiative balance is by scattering the incoming solar radiation, as a result of increasing the Earth's albedo, absorbing solar radiation and terrestrial radiation (Jacob et al., 1986). Aerosols also act as cloud condensation nuclei, which is helpful to the formation and growth of cloud droplets. The decrease in cloud droplet size may inhibit precipitation formation, extending the cloud lifetime (France et al., 2013).

Various studies have been already carried out to understand the impact of aerosols under a variety of meteorological conditions at a large number of places. The studies were also conducted over different cities of India such as Delhi, Jaipur, Kullu Valley, Nainital, Kanpur, etc. The emphasis in most of these studies is to study the variation trend in aerosol loading and heterogeneity, optical, and microphysical properties in different time periods (Alam et al., 2012; Tiwari and Singh, 2013; Kaskaoutis et al., 2007).

On January 30, 2020, the patient zero of deathly COVID-19 virus was reported in the Kerala state of India and in terms of precautions, the social distancing, and lockdown is the prominent way to handle this pandemic, thus the Prime Minister of India announced a nationwide lockdown from March 25, 2020 to April 14, 2020 (Gautam and Hens, 2020). Based on Moderate Resolution Imaging Spectroradiometer, aerosol products (aerosol optical depth [AOD], single scattering albedo [SSA], and Angstrom exponent [AE]), Ranjan et al. (2020) observed a significant reduction (–45%) in the AOD due to the lockdown over the Indian region. Whereas, Pathakoti et al. (2020) observed only 24%–25% reduction in the AOD during the first phase of lockdown in India.

In the present study, we have reported the aerosol loading and its consequence changes in weather in the year 2019–2020. The findings were also compared nationwide before lockdown (January 1, 2020 to March 24, 2020) and lockdown period (March 24, 2020 to July 31, 2020) conditions to understand the relatively changed AOD due to COIVD-19 pandemic.

ISSN: 2577-1949

Research Article

Neoarchean Granitoids of Bundelkhand Craton, India: Geochemistry and Geodynamic Settings

Sumit Mishra¹, Pradip K Singh²*, Vinod K Singh³, Alexander I Slabunov⁴, HC Nainwal¹ and Neeraj Chaudhary³.

- *Department of Geology, Hemveti Nondon Bahuguna Garhwel University, India
- *División de Geociencias Aplicades, Instituto Potosino de Investigación Científica y Tecnológica (IPICYT), Mexico
- Department of Geology, Institute of Earth Science, Bundelkhand University, India
- *Institutes of Geology, Karelian Research Centre, Russia

*Corresponding author: Pradip K Singh, División de Geociencias Aplicadas, Instituto Potosino de Investigación Centifica y Tecnológica (IPICYT), Camino a la Presa San José 2055, San Luis Potosí, Mexico

Submission: | July 02, 2017; Published: | October 17, 2018

Abstract

The potash-rich granite and granodiorite-granite series rocks are extensively exposed in the Bundelichand granite-greenstone belt around [hansi, Babina and Maurenipur in the central part of the criston, which are mostly calc-alkaline in nature, relatively high Sr (12-436ppm), low Y (9.1-67) and low Sr/Y (0.24-21.37) ratio characteristics. These rocks have high Rb (77.7-539), moderate Nb (7.2-42.2) and Nd (21.92-115), and goodnenically vary from mostly 1- to A-type granites generally formed during syn-to post-collision. The chondrite normalized rare earth element distribution pattern is poorly fractionated La_c/Lu_c=(3.4-31.79) with a negative Europium (Eu) anomaly (Eu/Eu*=0.2-0.82) showing subduction environment. The granodiorite-granite series rocks show mostly volcanic arc setting while potash-rich-granites plots within the syn-collision to post-collisional granite fields on the Yh+Ta vorsus Rb and Nb vorsus Y discrimination diagram. Geochemical characteristics indicate that anhydrous partial melting of the Paleo-Mesoarchean Tonalite-troublemite-granodiorite or mafic crust through subduction setting responsible for formation of these rocks.

Keywords: Necerchean granitoids; Subduction tectonics; Goodynamics settings; Bundelkhand Craton

Introduction

The early earth crust formation still remains immense wide scope for in depth research on the Precambrian crustal growth which evolved a wide range of geological processes including plate tectonics and magmatism [1-4]. Understanding the early earth evolution and its geodynamics is one of most fundamental scientific issues in geology, because the evolutionary trends of the planet earth cannot be resolved without adequate knowledge of Archean period. To understand the tectonic growth of continental crusts in Archean cratons, the granites are playing most important role in this context. The Bundelkhand Craton is nestled in the northern margins of Peninsular India. The Bundelkhand Craton begin with the ~3.5Ga crustal component growth signatures, as preserve in the form of TTG gneisses [5-7]. The Craton mainly constitutes older basement of TTG and mafic gneisses and is associated with migmatites, amphibolites, schist, and supra-crustal belt of meta-sedimentary and meta-volcanics. The ample potashrich granites and granodiorite-granite series rocks mostly inhabit of the craton and crustal growth takes place during Neoarchean period in multiple phases [7-9]. Recently, Singh & Slabunov [10-13] depict the Greenstone Belts and establish tectonic evolution of the craton, based on SHRIMP-dating of zircon and geochemistry

from the felsic volcanic rocks from the Babina belt. The present paper deal with the geochemistry of granitiods (granodioritegranite series and potash-rich granite) rocks from mostly central part of the Bundelkhand Craton to establish tectonic settings and the continental growth of the craton during Neoarchean period.

Geological Setting

The Bundelkhand Craton covers 29,000 km², lying between 24"11" to 26"27" N and 78"10" to 81"24" E, represents a semicircular outcrop. The low grade metamorphic rocks of the Bijawar Group (Paleoproterozoic) to the southeast, and Vindhyan Supergroup (Meso-to Neoproterozoic) to the southeast, south, southwest, and west are resting over on Bundelkhand Craton [7,14,15]. The major part of the craton comprises the different phases of magmatism, low-grade metamorphism and deformation of Archean TTG-gneissic rocks, mafic dykes and undeformed quartz veins [8,9,16-18]. The doleritic dykes are usually dark grayish green in color and have NNW-SSE to NW-SE trend [14,19]. A general characteristic of highly jointed quartz veins occur mostly about NE-SW to NNE-SSW trend. Slabunov & Singh [20] illustrate the greenstone belts from the central part of Bundelkhand Craton which are scattered in the E-W shear zones of 3-Slons width. The potash-rich granites

Pavan Kumar · Haroon Sajjad Bhagwan Singh Chaudhary J. S. Rawat · Meenu Rani *Editors*

Remote Sensing and GIScience

Challenges and Future Directions



Analysis of Land Use/Land Cover Mapping for Sustainable Land Resources Development of Hisar District, Haryana, India



B. S. Chaudhary, Reeta Rani, Sanjeev Kumar, Y. P. Sundriyal, and Pavan Kumar (1)

Abstract Natural resources on the earth are being continuously stressed to meet the demands of increasing population. The increasing population requires enhanced production of food, energy, and water. To ensure reasonable civic amenities for quality life, there is need for the development of more infrastructure, more areas under habitation, and enhanced per capita expenditure. Land resources, being finite, need to be prudently used to meet the ever-increasing demand. This requires the study of land use/land cover (LU/LC) and its monitoring to understand the changing dynamics and optimal utilization of the resources. Geoinformation technologies are helpful to a great extent for not only creation of baseline information but also to monitor such changes. The present study has been carried out for Hisar district of Haryana state, India, over a period of 10 years to understand the change in the land use/land cover pattern. The district has a total geographical area of 4174.52 sq. km. Digital image processing with selected ground truth has been carried out for generating the information from satellite data. IRS/LANDSAT data have been used for the purpose. This information has been analyzed in the light of various land resources constraints by taking collateral information on soil types, groundwater quality, and depth along with geomorphological constraints. This information has been used for suggesting land resources development plan for the region which will ensure optimum and prudent use of land resources.

Keywords Land use/land cover · Hisar · India · Land resources and sustainable development

B. S. Chaudhary

Department of Geophysics, Kurukshetra University, Kurukshetra, Haryana, India e-mail: bschaudhary@kuk.ac.in

R. Rani · S. Kumar · Y. P. Sundriyal

Department of Geology, HNB Garhwal Central University, Srinagar, Uttarakhand, India

P. Kumar ()

College of Horticulture and Forestry, Rani Lakshmi Bai Central Agricultural University, Jhansi, Uttar Pradesh, India

© The Editor(s) (if applicable) and The Author(s), under exclusive license to Springer Nature Switzerland AG 2021 P. Kumar et al. (eds.), Remote Sensing and GIScience, **Advances in Geographical and Environmental Sciences**

Praveen Kumar Rai Varun Narayan Mishra Prafull Singh *Editors*

Geospatial Technology for Landscape and Environmental Management

Sustainable Assessment and Planning





Chapter 8 Prioritization and Quantitative Assessment of Dhundsir Gad Using RS and GIS: Implications for Watershed Management, Planning and Conservation, Garhwal Himalaya, Uttarakhand



Ashish Rawat, M. P. S. Bisht, Y. P. Sundriyal, Pranaya Diwate, and Swapnil Bisht

Abstract The utilization of morphometric parameters in watershed management and conservation has reduced the work, time, manpower and expenditure immensely. Similarly, the quantitative assessment of Dhundsir Gad (Gad means Stream) watershed has been carried out to study the relationship between hydrological characteristics, lithological and structural antecedents for management, planning and conservation activity. The data for morphometric parameters is extracted from remotely sensed images and processed in geographical information system (GIS) platforms for quantitative analysis. Geological field investigation of the watershed is done to investigate inter-relationship between the hydrological characteristics, lithology and structural attributes. Morphometric characterization was measured from linear, relief and areal aspects for four subwatersheds of Dhundsir Gad. The geomorphic parameters quantified reveal the role of hydrology in association with lithology and structure in modifying the watershed and loss of natural resources. The prioritization of the subwatershed has been done after evaluating and ranking morphometric parameters. The subwatersheds have been given priority from low to high suggesting the state of urgency it is in for conservation. Regional patterns of hypsometric integral (HI) and hypsometric curves in the watershed have also been computed to understand the role of tectonics and soil erosion in shaping the relief of the watershed. The hypsometric HI and hypsometric curves also suggest the stage of development and total mass lost from the watershed.

A. Rawat (⊠) · Y. P. Sundriyal · S. Bisht

Department of Geology, H N B Garhwal University, Srinagar Garhwal, Uttarakhand 246174, India

M. P. S. Bisht

Uttarakhand Space Application Center, Dehradun, Uttarakhand 248001, India

P. Diwate

Centre for Climate Change and Water Research, Suresh Gyan Vihar University, Jaipur, Rajasthan 302017, India

Vertebrate Paleobiology and Paleoanthropology Series

Eric Delson

Vertebrate Paleontology, American Museum of Natural History New York, NY, USA

Eric J. Sargis

Yale University
Department of Anthropology, New Haven, CT, USA

Editorial Advisory Board

Ross D.E. MacPhee (American Museum of Natural History), Peter Makovicky (The Field Museum) Sally McBrearty (University of Connecticut), Jin Meng (American Museum of Natural History), Tom Plummer (Qurens Collego/CUNY).

Biological Consequences of Plate Tectonics

New Perspectives on Post-Gondwana Break-up-A Tribute to Ashok Sahni

Edited by

Guntupalli V. R. Prasad

Department of Geology, Center for Advanced Studies, University of Delhi, Delhi, India

Rajeev Patnaik

Center of Advanced Study in Geology, Panjab University, Chandigarh, India





ISSN 1877-9077 ISSN 1877-9085 (electronic) Vertebrate Paleobiology and Paleoanthropology Series ISBN 978-3-430-49732-1 ISBN 978-3-430-49753-8 (eBook) https://doi.org/10.1007/978-3-030-49753-8

This Springer imprint is published by the registered company Springer Nature Switzerland AG. The registered company address is: Gewerbestrause 11, 6130 Cham, Switzerland

Dedication to Jean-Claude Rage (1943-2018)

It is with great emotion and respect that we dedicate this volume to the m of our French colleague Jean-Claude Rage, a researcher at the (MNHN-CR2P) paleontological team, Paris, who passed away re Jean-Claude contributed to this volume as a leading author of two chap two of his most important research specializations, paleoherpetolocontinental paleobiogeography, for which his work is well-known g He worked for more than 50 years in collaboration with many colleagu around the world, identifying remains of squamates and amphibia various Mesozoic and Cenozoic microvertebrate localities of Europe, India, South and North Americas. In particular, Jean-Claude long association with Ashok Sahni and worked on the Late Creherpetofaunas of India since 1980 in collaboration with the Indian collaboration with the India



Sinews of India's Internal Security in 21st Century

Editors

Prof. Prashant Agarwal

Head

Department of Defence and Strategic Studies University of Allahabad

Dr. Sanjay Kumar

Associate Professor
Department of Defence Studies
Meerut College, Meerut



Allahabad State University, Allahabad in association with



New Delhi



ARIDSS

Advance Research Institute for Development of Social Science-ARIDSS, Meerut

Sinews of India's Internal Security in 21st Century

Published by Smt Neelam Batra G.B. Books PUBLISHERS & DISTRIBUTORS 4832/24, S-204 Prahlad Lane Ansari Road, New Delhi-110002 Ph: 09810696999, 011-41002854 E-mail: gbbooks@rediffmail.com

© Allahabad State University, Allahabad

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording, or otherwise, without the prior written permission of the authors and the publishers.

The views expressed in this book are those of the author and not at all the publisher. The publisher is not responsible for the views of the author and authenticity of data, maps in any way whatsoever. All disputes are subject to Delhi jurisdiction.

First published 2018

ISBN: 978-93 83930-73-9

Composing and Printing in India

Contents

	Prof. Rajendra Prasad: A Person of Proven Eminence	ix
	Preface	xiii
1.	Science and Technology as Force Multiplier for India's	
	Internal Security	1
	Prof. Rajendra Prasad & Praveen Bhoria	
2.	India's Internal Security Challenges	10.
	Prof. Gautam Sen	
3.	Cross-Border Terrorism: India's Primary Internal	
	Security Challenges	24
	Lt. Gen. Philip Campose	
4.	Cross-Border Terrorism and Insurgencies: Implication	
	for India's Internal Security	29
	Prof. G. Jayachandra Reddy & G. Vijay Kumar Reddy	
5.	Sino-Indian Border Imbroglio	47
	Lt. Gen. (Dr.) Mohan Bhandari	
6.	India's Environmental Security and its	
	Security Implications	55
	Lt. Gen. Nitin Kohli	
7.	Impact of Information Technologies on Warfare	75
	Maj. Gen. O.P. Gulia	
8.	Non-Traditional Security Challenges in Asia	
	Concept, Nature and Management	92
	Prof. K.S. Sidhu	
9.	Emerging Challenges of Naxalism to India's	
	Internal Security	115
	Prof. R.N. Misra	
0.	Present Trends on Naxal Issues in India	123
	Prof. Prashant Agarwal	
1.	Need to Tackle Naxal Threat	139
	Amit Kumar Ghosh	

		151
12.	Conceptualising Environmental Security	151
	Dr. Sanjay Kumar	167
13.	Energy Security: A Road Map for India	167
	Dr. Neelam Kumari	101
14.	India's Environmental Security Policy	181
	Dr. Dhirendra Dwivedi	
15.	Naxalism: Today's India's Burning Internal	
	Security Issue	187
	Dr. A.K. Dixit	
16.	Naxal Violence: Internal and External Linkages	198
	Dr. Bina Rai	
17,	Perspective on India's Internal Security: Issues & Challenges	211
	Deepak Kumar	
18.	Naxalism and India's Internal Security Problem	223
	Dr. Krishna Nand Panday	
19.	India's Internal Security: Challenges and Dimensions	241
	Dr. Krishna Nand Shukla	
20.	Naxalism as a Threat to Human Security: Special	
	Reference of Chhattisgarh	260
	Dr. Rajeev Rathore & Dr. Gulab Chandra Lalit	
21.	Countering Naxal threats in the 21st Century	272
	Dr. Anita Rathi & Dr. Suman	
22.	The Naxal Problem: Understanding the Issue,	
6.4	Challenges and Diagnostic Approach	289
	Dr. Mohammad Samir Hussain	
	Index	316
	ITRIGA	210

Perspective on India's Internal Security: Issues & Challenges

Deepak Kumar

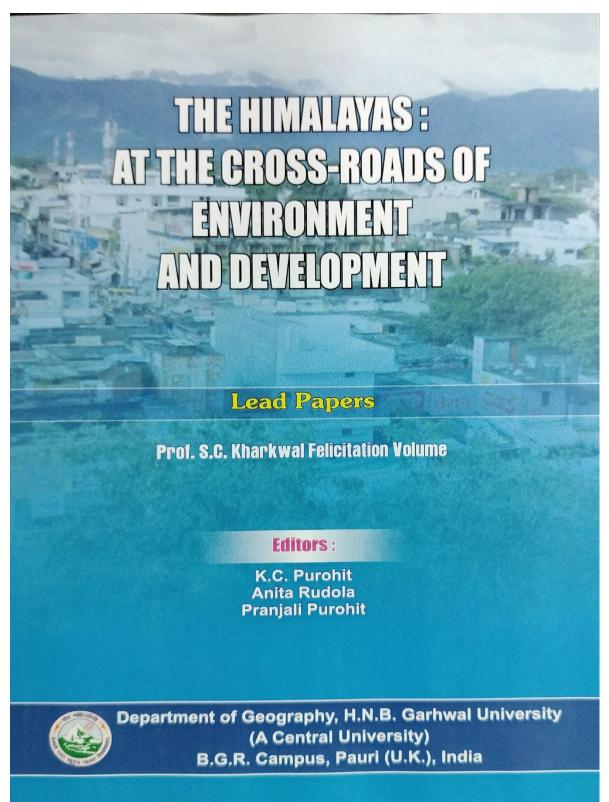
Associate Professor, Department of Defence and
Strategic Studies, H.N.B. Garhwal University Campus

Badshahithaul, Tehri, Garhwal

here is a genuine query in every discerning Indian citizen's mind-Will the greatest future security threat to India be from inside or outside the country? Because prudence advises that to be forewarned is forearmed. Sun Tzu had long back (6th cent B.C.) said; "If you know your enemies and know yourself, you will not be imperiled in a hundred battles, if you do not know your enemies, but do know yourself, you will win one and lose one; if you do not know your enemies nor yourself, you will be imperiled in every single battle." Therefore it is essential that we know our strengths & weaknesses and objectively as well as realistically analyze the threats - external & internal, covert & overt, state & non-state, posed to India. Experts are of the opinion that threats & challenges to internal security are far greater and that India faces "war within its borders".

India is today an astounding study in contrasts. International pundits have predicted a "global power shift" with a "transfer of power from West to East", and some have already anointed India, as one of the "great powers" of the proximate future. Among the Indian elite, there is a surging confidence, backed by sustained growth of the economy. Despite the global meltdown of 2008, India has sustained a 6%-7% growth rate, notwithstanding the widespread contraction of economies and

Chapter 1.



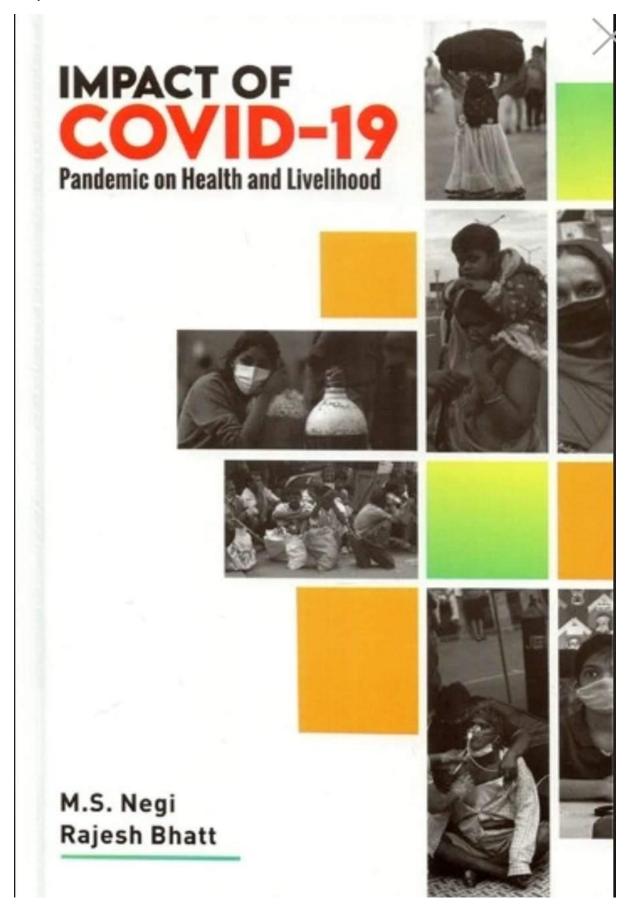
GLOBAL WARMING AND CLIMATE CHANGE

· Anita Rudola and S.K.Rudola

Abstract

Harmful impacts of Global Warming and Climate Change are already clearly visible on our surroundings, on climate, on wildlife and on human beings. There are visible on our surroundings, on unprecedented torrential rains, extreme storm events wild fires, dangerous heat waves, unprecedented torrential rains, extreme storm events and change in timings and durations of each season. Different prestigious organizations working under United Nations and other independent research organizations are expressing serious concern over shrinking of ecosystems and global biodiversity, receding of glaciers, frequent instances of flooding and the rising sea level. The paper makes an effort to show how development for ease of living has caused generation of increased greenhouse gases that are main source of global warming as area of natural forests is decreasing. The paper also tries to explain in simpler terms the effect of greenhouse gases and concept of global warming and climate change. Individual efforts made by common people for conservation of environment are also highlighted for due inspiration and appreciation. For limiting global warming to 1.5°C, adaptation and mitigation measures are to be taken such as reducing emissions and improving resilience by adopting improved technology, involving local people and choice of infrastructure along with viable policy changes for conservation of environment.

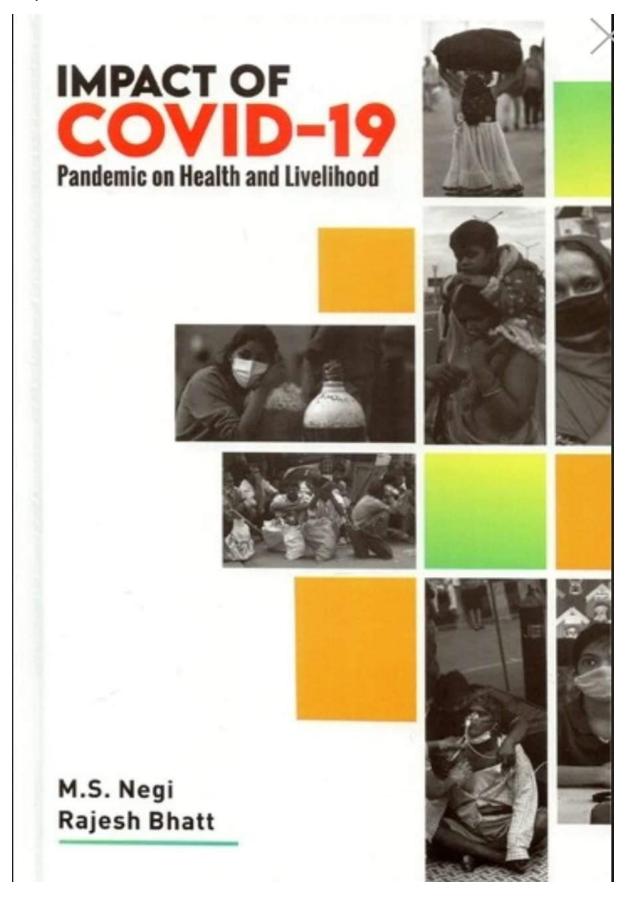
A few days back, a Press Release issued by the Intergovernmental Science-Policy Platform on Biodiversity and Ecosystem Services (IPBES), an independent body working with the United Nations has sent alarm waves across the world by stating, " Current global response insufficient; transformative changes needed to restore and protect nature; opposition from vested interests can be overcome for public good". It further indicated that about 1 million species of animals and plants are now threatened with extinction, many within decades, more than ever before in human history. The report is compiled by 145 expert authors from 50 counties over the past three years including the inputs from another 310 other authors. The report assessed changes over the last five decades. It is also feared that ecosystems, species, wild population, local varieties and breeds of domesticated plants and animals are shrinking, deteriorating or vanishing and the loss is a direct result of increased human activity. Another report in Hindustan Times highlights, "India's forest cover loss in 17 years is four times the size of Goa" and observes that India has lost 1.6 million hectares of tree cover between 2001 and 2018. As per the data analyzed by the WRI's (World Resources Institute) Global Forest Watch five North eastern states- Nagaland, Tripura, Meghalaya, Mizoram and Manipur are responsible for over 50% of all tree cover loss in the same period. This loss of tree cover contributed to 172 MT of carbon emission in India during the period. The analysis reveals that the total tree cover which used to be 12% of the country's total geographical area in 2000 reduced to 8.9% in 2010. The findings of Global Forest Watch are quite different from that of the Forest Survey of India which has been recording gradual increase in tree and forest cover during the same period. The difference can be attributed to different methodologies adopted by these organizations.



Impact of SARS-COV2 (Novel Corona Virus) in A Srinagar Garhwal as a Geographical Perspective

Veer Singh & Anita Rud

Abstract: Sars-cov2 (Novel-Corona Virus) outbreak impacts alm all over the world, almost all the major economies of the world imposing Lackdown for preventing infection. The Economic news such as tourism, transport, recreation, markets everything close during this time. Here in this paper researcher analyzed how differe types of employed people such as permanent, semi- permanent, Da wages (informal Sector), Self-employed workers affected by a Lockdown imposing by the government of India. During panden. work from home initiative taken by the various organization; this Investigationan attempt has been made to analyze the atms. of peopleabout Work from home initiative and their expenses. about the same through the questions such as, is it easy or tought them, workers work load increases or decreases, are they happy not by the initiative. Further the study also investigate about he many days daily wages workers opened their shop, is they we sanitizing techniques during work. Shapkceper getting proper my of goods during lockdown, then a comparative analysis of person. Semi-Permanent, Daily wages, Self-employed was done to establish



Physciological Affects of Covid-19 on the Population of Surankote Poonch, Jammu Anmd Kashmir: A Geographical Study

Raiz Ahmed and Anita Rudo

Abstract: In this paper, we analyze the Physiological effects of COVID-1 on the population of Surankote. COVID-19 or Coronavirus become, major disaster for the youthful generation because it drastically change the way and pattern of life. Physiologically people become downhearte. due to the fear of exclusion from the social circle, social disconnection and homesickness throughout the world. Pandemics have intensified the anxiety, stress level, feeling of dissatisfaction, failure, and excessive worry. It creates a negative impact on physiological well-being due to rumors, gossips, and misleading information in society. People think life is like a suicidal thought due to the fear of infection and uncertainty about life adds to depression, insecurity about the future, feeling irritability, restlessness, moodiness, and alienation. Sadness segregation of income loss pushed the people in the mental health condition in the existing one. Many people may be faced with an increased level of alcohol and drug use insomnia and anxiety. People feel discounged due to poor connectivity and unavailability of other needful resource, low confidence, self-esteemed, and feeling of doubt about one's own decision. It affects the mental health of people and produced havec m the population. COVID-19 reduced the courage, strengths, and momi value inthe community. I/